श्री परमात्मने नमः ।

# हिन्दीकी तीसरी पुस्तक ।

भारतवर्षीय सर्व साधारण विद्यार्थियोंके हितार्थ देवरी (सागर) निवासी,

श्रीनाथूराम प्रेमी द्वारा लिखित.

जिसे

पं० हरिप्रसाद भगीरथजीने

मुम्बईस्थ

'गु० प्रे०' में छापके प्रकाशित किया

सन् १९०९ सम्वत् १९६५

# प्रस्तावना.

हर्षका विषय है कि साम्प्रत हमारा भारतवर्ष सरकार अङ्ग्रेजकी कृपासे अपनी पूर्वसंचित विद्याज्ञानजनित कीर्तिका उद्धार करनेके सम्मुख हो रहा है और अपने वृद्धविद्यागर्भको जो चिरकालसे रिक्त हो रहा था शनैं शनैं भरने लगा रिक्ताशयकी पूर्तिके लिये प्रतिदिन नवीन २ पुस्तकें प्रस्तुत होती रहती हैं और उनसे इसके चारित्रादि अङ्ग पुष्ट होते रहते हैं परन्तु देखाजाता है कि, यह कार्य बड़ी शीघ्रता और अविचारपूर्वक किया जारहा है, जिससे लाभके साथ २ असंख्य हानियां भी हो रही हैं

जिसप्रकार मनुष्योंकी प्रकृति मद्यपदार्थोंके अनुकूल निर्दय, सदय, आस्तिक, नास्तिकादिरूप होना वैद्यक शास्त्रसे सिद्ध है उसी प्रकार प्रत्येक देशकी ऐहिक पारलौकिक आचारविचारोंकी उत्कृष्टता और निकृष्टता प्रचलितपुस्तकोंकी शिक्षापद्धति पर निर्भर है

मनुष्यकी जीवन पद्धतिका ढाचा उसकी बाल्यावस्थामें तैयार होता है अर्थात बाल्यकालमें उसकी प्रवृत्ति जिस ओरको झुका दी जाती है, आजन्म उसी ओर झुकी रहती है अतएव बाल्यावस्थाकी शिक्षा एक कठिन और असाधारण कार्य है जिसकी ओर ध्यान देना परम आवश्यक है

खेदका विषय है कि, साम्प्रत पाठ्यपुस्तकोंके दुर्निवार प्रचारसे सदा का सदाचारी भारतवर्ष एक ओरसे विद्योन्नति करनेके साथ २ दूसरी ओरसे कदाचारी हो रहा है और अभीतक इसके विरोधके लिये जितना प्रयत्न होना चाहिये उतना नहीं हुआ है यद्यपि काशी तथा आराकी सभा सोसाइटियोंके द्वारा अनेक भ्रष्टपुस्तकोंका प्रचार रोका गया है तथापि अनेक प्रान्तोंमें अबभी ऐसी पुस्तकें पढ़ाई जाती हैं जिनसे हमारे सुकोमल बालकोंके हृदयक्षेत्रमें धर्म तथा सदाचारशिक्षाका बीज जो बाल्यकालमें पर मोपयोगी स्थान नहीं पाता और उनका अमूल्य समय कुत्ते बिल्ली बकरि योंका थोथा ज्ञान करानेमें, विलायती रंग ढंगोंमें और नास्तिकताके विचारोंमें नष्ट किया जाता है विद्वानसमालोचकों और सभाओंका प्रयत्न यदि क्रमश जारी रहा तो आशा कीजाती है कि, थोड़े समयमें शिक्षा विभागको यथा योग्य उज्ज्वलदर्शनेका सौभाग्य प्राप्त हो जावेगा परन्तु ध्यान रहे कि, हानि

लिखकर पुस्तकका व्यर्थ आकार नहीं बढ़ाया गया है। पद्यात्मक पाठोंके कठिन शब्दोंका अर्थ समझकर पाठोंके ऊपर लिखदिया है, क्योंकि बहुतसे पाठकोंको पद्यका अर्थ समझानेमें विशेष कष्ट उठाना पड़ता है

सब धर्म और सबजातिवाले इस पुस्तकसे लाभ उठासकें, इसलिये पुस्तकभरमें कोई भी विषय ऐसा नहीं रक्खा गया है जिससे कि, किसी धर्मविशेषका खंडन मंडन हो

प्रस्तावनाको पूर्ण करनेके पहिले गुणग्राही पाठकोंसे निवेदन कर आशा की जातीहै कि, वे इस अल्पभेटको स्वीकार कर मेरे उत्साहको वृद्धिंगत करेंगे और पुस्तकमें यदि कुछ अल्पबहुत त्रुटियां रह गई हों तो क्षमा करेंगे क्योंकि, हिन्दीरसिकोंको रिझानेके लिये यह मेरा प्रथम ही प्रयत्न है

पुस्तक मुद्रित होते समय व्यक्तिविशेषके द्वारा मंगलाचरणका प्रथम दोहा असमीचीन समझा जाकर मेरी आज्ञाके विनाही प्रतिभाशालीबुद्धिकद्वारा दुरुस्त किया गया है मैं चाहताहूं कि, पाठक उसे नष्टभ्रष्टरूपमें न पढ़कर इसप्रकार सुधारके पढ़ें

> मुक्तिकन्त भगवन्तवर, सुगुण अनन्त समन्त।
> अन्तक अष्ट अरीनके, वन्दूं श्री अरहन्त ॥ १ ॥

अलमति विस्तरेण विज्ञेषु

भवदीय कृपापात्र,

**नाथूराम प्रेमी.**



# विषयानुक्रमणिका



---



श्रीपरमात्मने नमः ।

# हिन्दीकी तीसरी पुस्तक.



मगलाचरण. दोहा ।

शक्ति कन्त भगवन्त वर, सुगुण अनन्त लसन्त ॥
अन्तक सर्व अनीष्टके, वन्दहुँ श्री भगवन्त ॥ १ ॥
वीरवराननतें विकस, विहँमति बादिन ओर ॥
वाणी विविधविभङ्गि जो, प्रेमी नमत निहोर ॥ २ ॥
सज्जन मिष्ट हितंकरी, जिनकी सुगुणगरिष्ट॥
वाणी भवातिथिनष्टकर, वन्दहुँ सत गुरु इष्ट ॥ ३ ॥
शुभ उर खेतनमें सुखद, ज्ञान बीज जमजाय॥
हिन्दीकी पुस्तक तृतिय, याहि हेतु प्रगटाय ॥ ४ ॥

---

पाठ १ ला

## विद्यार्थियोंकी ईश्वरसे प्रार्थना.

करुणाकर—दयाके करनेवाले    सुखद—सुख देनेवाले
अवलोक—देख    अनुगामी—पीछे चलनेवाले

प्रचुर–बहुत
काया–शरीर
याचन–मांगना
स्वार्थी–मतलबी
वासना–इच्छा
अनुकूलें–सन्मुख करें.
तव–आपकी.
भव–संसार
सुहाई–उत्तम
परस्वारथ–दूसरोंका उपकार.
सूनी–रहित
बाल–लड़के

दोहा।

करुणाकर सुन्दर सुखद, तीन लोकके नाथ।
करहु कृपा अवलोक इत, बालक नावत माथ ॥१॥

चौपाई।

ज्ञानवान प्रभु अगम अपारा।
हम अज्ञानी रहित विचारा ॥
सुख अनंत तुम अविचलधारी।
हम अतिही दुखिया संसारी ॥
तुम अनन्त बल धारी स्वामी।
हम बल हीन दास अनुगामी ॥
प्रभु तुम प्रचुर पराक्रम पूरे।
पै हम वीरज हीन अधूरे ॥
निष्कलङ्क तव निर्म्मल काया।
हम अनन्त भव पाप कमाया ॥
तुम दाता हम दीन भिखारी।

नाथ प्रभू हैं अनाथ दुखारी ॥
याचत हम सब शिशुगण दीजे।
ये वरदान प्रभू सुन लीजे ॥
सज्जन संगति सदा सुहाई।
गुरु पितु मातु भक्ति प्रगटाई ॥
कबहू स्वारथि बुधि नहिं होवें।
परस्वारथमें तन धन खोवें ॥
धर्म बुद्धि ह्वै दिन २ दूनी ॥
पापवासनातें बुधि सूनी ॥
जाति देश हित कबहुँ न भूलें ॥
नीतिपंथ चल जग अनुकूलें ॥
निर्मल बुद्धि अस भै सुखदाई ॥
जातें जगमें यश प्रगटाई ॥

दोहा।

या प्रकार सुखिया करहु, हे प्रभुदीन दयाल।
'प्रेमी' और न चहहिं कछु, दास आपके बाल ॥

पाठ २ रा

## सत्यवादी बालक.

किसी नगरमें एक धनाढ्य महाराज रहता था. उसके यहा एक लड़का झाड़ने बुहारनेके काम पर

नौकर था, महाराज उसकी चालचलन और आज्ञाकारी प्रकृति देख सदा प्रसन्न रहता था, एकदिन वह लडका मालिकके बैठकखानेको झाड रहाथा कि, अचानक उसकी नजर सामने पड़ी हुई एक सोनेकी मुहरपर पडी लडकेने मुहरको उठाकर उसे अपने कपडोंमें छुपानी चाही, परन्तु इसी समय उसके भाव बदल गये, उसने उस मुहरको फिर जहा की तहा रखकर चारों ओर देखना प्रारंभ किया और भयभीत होकर कापने लगा कि, किसीने इस कृतको देख तो नहीं लिया है उसका शरीर काठके समान अचल हो गया अपना कर्त्तव्य बिलकुल भूलकर वह विचारने लगा कि, हे परमेश्वर! मुझे ऐसे कामोंसे सदा बचाये रह देखो! यदि मैं इस मुहरको चुरा लेता तो प्रथम तो मै चोर कहलाता, दूसरे बात प्रगट होनेपर मैं नौकरीसे जाता, तीसरे जगतमें अपकीर्ति होती चौथे अविश्वासी होनेसे कोई खानेको नहीं देता, पाचवें चोरीके अपराधमें पडकर मुझे जहलखाने जाना पडता, छठें यदि कोई देखता नहीं तोभी

ईश्वरके निकट अपराधी अवश्य ठहरता. सातवें चोरीकी आदत पड़जानेसे सदा ऐसेही आपत्तियोंमें फँसना पड़ता जिससमय लड़का इसप्रकारकी चिन्ताओंमें पडाथा घरकी स्वामिनी पासके कमरेमेंसे उसकी यह सब हरकतें देख रहीथी इन बातोंसे प्रसन्न हो उसने प्रगट होकर बालकको उठाकर गलेसे लगा लिया और प्यारसे बोली. बेटा ! तुम कुछ शोच मत करो, मैंने तुम्हारी सब कारवाई देख ली है आजसे तू यह झाडू बुहारीका काम न करना तू श्रेष्ठ और सत्यवादी बालक है ।

इसके पीछे स्वामिनीने यह सब कथा अपने पतिसे कही. दोनोंकी सम्मति उसके पढ़ानेकी हुई. और वह इनकी आज्ञासे रोज पाठशालाको जाने लगा व थोडेही दिनोंमें पढ़लिखकर अच्छा विद्वान होगया. और अन्तमें स्वामीके सन्तान न होनेसे अपनी योग्यताद्वारा गृहका सर्वाधिकारी होगया.

तात्पर्य–" सत्यवादी सदा सुखी. "

---

पाठ ३ रा.

## जीव

ससारमें जितने पदार्थ हैं वे दोप्रकारके हैं एक जडरूप और दूसरे चैतन्यरूप जडरूप ( जिन्हे अजीव व अचेतन भी कहते हैं ) उन्हें कहते हैं जो विना किसी दूसरेकी मददके एक जगहसे दूसरी जगह न जासकें तथा जो खुद कुछ कार्य न करसकें जैसे धातु, पाषाण, मृत्तिका, काष्ठ आदि दूसरे चैतन्यरूप अर्थात् जीव उन्हें कहते हैं जिनमें देखने जाननेकी तथा चलने फिरनेकी शक्ति होती है जैसे देव,मनुष्य,पशु,पक्षी,कीट, पतङ्गादि

जीवोंके मुख्य दो भेद हैं, स्थावर और जंगम स्थावर जीव उन्हें कहते हैं जिनके केवल मात्र एक स्पर्शन ( त्वचा ) इन्द्रिय होती है वृक्ष, जल, अग्नि, गीली पृथिवी, यह सब स्थावर जीवमयी हैं, क्योंकि, अनेक कारणोंसे यह सब पदार्थ घटते बढ़ते

व नष्ट होते रहते हैं **जंगम** जीव चार प्रकारके हैं, द्वेन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौइन्द्रिय और पंचेन्द्रिय द्वेन्द्रियजीव उन्हें कहते हैं जिनके स्पर्शन ( त्वचा ) और रसना (जिव्हा)इन्द्रिय हो अर्थात् जिनके शरीर हो और स्वादशक्ति धारण करते हों जैसे कृमि (कीट), गिडाड आदि तेइन्द्रिय जीव उन्हें कहते हैं जिनके स्पर्शन, रसन और घ्राणेन्द्रिय ( नाक ) हो अर्थात् जिनके शरीर हो. जो पदार्थका स्वाद जानसकें, और जो सूंघसकें, जैसे पिपिलिका ( चिऊटी ), खटमल, आदिक. चौइन्द्रिय जीव उन्हें कहते हैं जिनके उक्त तीन इन्द्रियोंके सिवाय चक्षु ( नेत्र ) इन्द्रिय हो अर्थात् जो देखभी सकें जैसे भ्रमर मक्खी आदिक. और पचेन्द्रिय जीव उन्हें कहते हैं जिनके उक्त चारके सिवाय श्रोत्र ( कान ) इन्द्रियभी हो अर्थात जो चार इन्द्रियोंके विषयोंके अतिरिक्त शब्दभी सुनसक्तेहों. जैसे मनुष्य, देव, पशु, पक्षी आदि.

पचेन्द्रिय जीवोंके भी दो भेद हैं, एकसंज्ञी और

दूसरे असंज्ञी. सज्ञी उन्हें कहते हैं जिनके मन ( विचार शक्ति ) होवे और असज्ञी उन्हें कहते हैं जो मनरहित होवे

इन भेदोंके अतिरिक्त सम्पूर्ण जीवोंके जलचर थलचर, नभचर, उभयचर आदि अनेक भेद हैं, केवल जलमें रहनेवाले मछली, कच्छप, मगर, आदि जलचारी हैं; पृथिवीपर चलनेवाले मनुष्य, पशु आदिक थलचारी हैं, आकाशमें उडनेवाले गिद्धादि पक्षी नभचारी हैं और उभयचारी वह कहलाते हैं, जो जल और थल, आकाश और पृथिवी अथवा आकाश और जल दो २ स्थानोंमें रहें जैसे जलमानुष, मुर्गा, काग, जलमुर्गी आदिक

ऊपर कही हुई पाचइन्द्रिय, तीनबल( मनबल, वचनबल और शारीरिकबल ), आयु और श्वासोच्छ्वास ऐसे १० प्राण सम्पूर्ण जीवोंके होते हैं इन दश प्राणोंमेंसे किसीभी प्राणको प्रमादवश नष्ट करना ही हिंसा कहलाती है अर्थात् कीसी जीवके एक प्राणकाभी वियोग करना हिंसामें शामिल है,

और इस हिंसाके बराबर दुनियामें कोई पाप नहीं है इस लिये हे बालको ! ससारमें इस प्रकारसे चलो जिसमें किसीभी प्राणीको दु:ख न पहुचे अर्थात् उसके किसीभी प्राणका वध न हो जावे, अहिंसाके बराबर कोई धर्म नहीं है. शास्त्रमें कहा है कि— " अहिसा परमो धर्म· हिसा सर्वत्र गर्हिता "

पाठ ८ था

## धर्म



( गुरु शिष्य संवाद )

गुरु—बालको ! आज हम तुमको धर्मका पाठ पढ़ाते हैं क्या तुममेंसे कोई जानता है कि, धर्म किसको कहते हैं ?

शिष्य—हा गुरुजी ! हम लोग धर्मको अच्छे तरहसे जानते हैं क्योंकि वह हमारे सनातनसे चले आता है. तीर्थयात्रा, गंगास्नान, पूजन, साधु स न्यासियोंकी सेवा करना यही हमारा परमधर्म है.

गुरु—नहीं ! केवल इसीको धर्म नहीं कहते हैं धर्मकी परिभाषा बहुत कठिन है रागी, द्वेषी, क्रोधी देवताओंकी पूजनमें, बकरा भैंसा आदि मारकर चढ़ानेमें, मायावी विषयलम्पटी वेषधारी साधुओंकी सेवामें, बनावटी तिलक छापे लगाकर बनावटी माला फेरनेमें, अथवा केवल मूर्तिपूजाका निषेध कर नेमें धर्म नहीं होता है और न इन कार्योंके कर- नेवाले धर्मात्मा हो सक्ते हैं

शिष्य—तब गुरुजी महाराज ! आपही बताइये धर्म किसको कहते हैं ?

गुरु—अच्छा ध्यान लगाकर सुनो ! शास्त्रमें कहा है कि, "वस्तुस्वभावो धर्म " अर्थात् वस्तु ( पदार्थ ) के स्वभावको धर्म कहते हैं जैसे अग्निका स्वभाव (धर्म) उष्ण ( गर्म ) है, गुडका

स्वभाव मिष्ट है, जलका स्वभाव शीतल है, जीवका स्वभाव ज्ञान (जानना) है. जिस प्रकार इन वस्तुओंके उष्ण, मिष्ट, शीतल, ज्ञान आदि धर्म हैं उसी प्रकार जगतके सम्पूर्ण पदार्थोंमें पृथक् २ सैक्डों धर्म होते हैं, जिनका निर्णय करना बहुत कठिण है. अपने पूर्वाचार्योंने इस विषयके सैक्डों ग्रन्थ संस्कृत भाषामें बनाये हैं जब तुम उनको देखोगे पढ़ोगे जब जान सकोगे कि, पदार्थोंमें कैसे २ विचित्र धर्म हैं और सब पदार्थोंके समान जीवके मुख्य धर्म १० हैं जिनका पालन करना मनुष्योंके परम कर्त्तव्य है, वह दश धर्म ये हैं १ क्षमा (क्रोध न करना), २ सत्य (झूठ न बोलना) ३ मार्दव (मान न करना), ४ आर्जव (छलकपट न रखना), ५ शौच (शरीर और चित्त पवित्र रखना), ६ संयम (इन्द्रियोंको वशमें रखना), ७ तप (इच्छाको रोकना), ८ त्याग, (अनेक प्रकारका दान देना), ९ आकिंचन (अल्पपरिग्रह रखना) और १० ब्रह्मचर्य (पराई स्त्रियों-

को माता बहिन और लडकीके समान जानना) इनके सिवाय और भी अनेक धर्म इस जीवके हैं ये सब आत्माके खास स्वभाव है, इसलिये जो जीव अपने इन स्वभावोंमें रहता है वह तो धर्मात्मा है और जो इनको छोड कर हिंसा क्रोध, मान, माया, लोभादिकके वशीभूत हो रहता है वह पापी व अधर्मी है जो इन धर्मोंको नहीं छोडता वह इस लोकमें यश व सुखका भागी होकर परलोकमें वैकुंठ प्राप्त करता है असलमें धर्म शब्द व्याकरणमें धृञ्धातुसे मन् प्रत्यय लगकर बना है जिसका अर्थ धारण करना होता है अर्थात् जो संसारके दु खोंसे निकालकर वैकुंठमें धारण करे,

शिष्य—गुरुजी महाराज। तो क्या तीर्थ, यात्रा, गंगास्नान, मूर्तिपूजन, यज्ञादिक सर्वथा धर्म नहीं हैं?

गुरु—नहीं बालको। हमारा यह अभिप्राय नहीं है कि ये धर्मकार्य नहीं हैं, ये भी धर्म के बढानेवाले हैं, परन्तु उस दशामें जब कि, हमारे कहे हुए दशधर्मोंको धारण करके यह

किये जावें, परन्तु इन दशधर्मोंके विना वे धर्मकार्य कदापि नहीं हो सक्ते और न इनके किये विना कोई धर्मात्मा हो सक्ता है. इसलिये तुम्हें चाहिये कि, इन धर्मोंको यथाशक्ति धारण करो.

शिष्य–अच्छा महाराज! आजके उपदेशसे हमको बड़ा भारी आनन्द हुआ.

---

पाठ ५ वाँ.

## आरोग्यता

जगतमें सुख होनेके जितने द्वार हैं उनमें एक आरोग्यताभी है, क्योंकि, दुःखसे छुटकारा पानेको सुख कहते हैं और दुःख तीन प्रकारके हैं. १ दैहिक ( शरीरसम्बन्धी ) २ दैविक ( भाग्यसम्बन्धी) और ३ मानसिक ( मन सम्बन्धी. चिंता आदि ) जब तक इन तीनों दुःखोंसे छुटकारा न हो तब तक सुख नहीं मिल सक्ता, इन तीनों दुःखोंमेंसे प्रथम दैहिक दुःखके नाशको ही आरोग्यता कहते हैं "एक बड़े भारी वैभवसम्पन्न राजासे जो आरोग्य नहीं है एक

दीन भिखारी जो शरीरसे हृष्टपुष्ट और नीरोग है अत्यन्त सुखी है " ऐसा नीतिकारोंका वाक्य है. इसका मतलब यही है कि, यद्यपि राजाके समस्त सुख सामग्री मौजूद है, परन्तु वह रोगी होनेके कारण भोग नहीं सक्ता और भिखारीके यद्यपि खानेको नहीं है तथापि जो कुछ सबेरे साझ उसे मिलता है उसे अच्छी तरह भोग सक्ता है, इससे सिद्ध होता है कि, आरोग्यता सुखकी जड है रोगी पुरुष खाने योग्य वस्तुओंको भोग नहीं सक्ता, व्यापारादि जीवनोपाय ( जीनेके उपाय ) नहीं करसक्ता, विद्याभ्यास नहीं करसक्ता, दान तपादि पारलौकिक ( परलोकमें सुख देनेवाले ) कामोंके करनेमें असमर्थ होता है साराश रोगीका जीना केवल दु खमयी है और निरोगी पुरुष इसके विरुद्ध सब कार्य सुखपूर्वक कर सक्ता है.

आरोग्य रहनेके अनेक उपाय हैं उनमेंसे मुख्य ये हैं १ गृह शरीर और पहिरने ओढ़नेके वस्त्रोंकी स्वच्छता, २ निर्मल जल, ३ स्वच्छ हवा,

४ योग्य भोजन, ५ योग्य निद्रा, ६ कसरत जो सदा निरोगी रहना चाहें उन्हें चाहिये कि इन छह बातों पर सदा ध्यान रक्खें,

प्रायः देखा जाता है कि, जो विद्यार्थी पढ़नेमें बहुत परिश्रम करते हैं और आरोग्यतापर ध्यान नहीं देते वह परीक्षाके ऐन वक्त पर बीमार होजातेहैं तथा परीक्षामें नहीं बैठ सक्ते और इस थोडीसी लापरवाहीसे वे सालभरकी महिनत व्यर्थ खोदेते हैं तथा शारीरिक दुःखभी उठाते हैं. बालकोंको तो आरोग्यताके ऊपर सबसे अधिक ध्यान देना चाहिये, क्योंकि बीमार होनेसे उनका विद्या पढनेका अमूल्य समय नष्ट होता है

---

पाठ ६ वाँ

## बिल्ली और बन्दर.

एक समय दो बिल्लियोंने मिलकर किसीके घरमें से एक रोटी चुराई.और घरसे बाहिर आकर दोनोंने अपना २ हिस्सा बराबर २ करके लेना चाहा,

जब रोटीके दो टुकडे किये तो दोनोंमें इस बातका झगडा चलने लगा कि, हमारा हिस्सा छोटा है तेरा बडा है कई उपाय किये, परन्तु दोनोंका मन साफ नहीं हुआ आखिर दोनोंकी यह सलाह हुई कि, इसका निबटारा किसी दूसरेसे करवाना चाहिये वहां पासके झाडपर एक बन्दर बैठा हुआ था उसने कहा कि, लाओ इस रोटीके मैं बराबर २ हिस्से करदूं, इस बातसे दोनों राजी होगईं और वह रोटी बन्दरको देदी गई बन्दरकी जाति बहुत चालाक होती है, उसने जब रोटीके दो हिस्से किये तो एक हिस्सा कुछ बडा होगया, इस लिये उसने उसका थोडा टुकडा तोडकर अपने मुहमें डाललिया, परन्तु ऐसा करनेसे वह दूसरेसे छोटा होगया तब दूसरेका भी कुछ टुकडा तोडके अपने मुहमें किया, परन्तु ऐसी होशियारीसे कि,जिसमें बराबर न हो जाय टुकडा तोडनेसे फिर छोटा होगया, इसी तरह उसने जब कईवार किया और रोटीका जरासाही टुकडा रहगया तब बिल्लियोंको इसके इस विचित्र न्यायसे बडा बुरा लगा,

वे घवड़ाकर बोलीं अब हम तुमसे यह न्याय नहीं करना चाहतीं, आप ही कर लेंगी. इससे जो रोटी बची है वह हमको देदो. इसपर बन्दर बोला कि, वाह ! मैंने जो इतनी महिनत की सो क्या व्यर्थ ही गई यह रोटी तो मेरी महिनतकी बची है ! ऐसा कहकर उसे खाके दात दिखाकर झाड़पर जा बैठा. बिल्लिया ताकतीही रह गई.

इस कहानीसे यह शिक्षा लेना चाहिये कि, दोकी लड़ाईमें तीसरेको लाभ पहुचता है बहुत से आदमी आपसमें लड झगडके सरकारी अदालतोंमें मुकदमा चलातेहें और दोनों तरफसे वकील बैरिष्टरों और गवाहोंमें हजारों रुपया लुटाते हैं, परन्तु फल उसका ऐसाही होताहै कि दोनों रुपया बरबाद कर बिल्लियों सरीखे चुप हो जाते हैं, इसलिये यदि कोई झगड़ा आनपड़े तो उसका निवटारा अपनी जातिकी पंचायतीसे ही कराना चाहिये, क्योंकि उसमें नतो इस तरह रुपयाही लुटाना पड़ता है, और न मारे २ फिरना पड़ताहै, इसलिये सब

बालकोंको चाहिये कि वे इसतरह कभी आपसमें झगडके अदालत तक न जावें

पाठ ७ वाँ

## प्रात काल

| | |
|---|---|
| प्रात समय-सबेरे,तड़के | सुहावनि-सुन्दर |
| गाता-शरीर. | पवन-हवा |
| नरहिं-मनुष्योंको | चितावैं-चेताते हैं |
| अथवा-नहीं | उपवन-छोटा जंगल |
| कुसुम-फूल | अनुराग-प्रेम |

चौपाई।

प्रात समय इक पवन सुहावनि ।
चलत ठंडि उत्तम मन भावनि ॥
जो नर जागत उठत प्रभाता ।
रोगरहित वाके सब गाता ॥ १ ॥
प्रात जागनेके गुण जेते ।
कहँ तक लिखहु वहुत हैं तेते ॥
देखहु प्रात होन जब लागत ।
पक्षीगण सब नरहिं चितावत ॥ २ ॥

वोलत मधुर सुहावनि वानी।
मनभावनी प्यारि रस सानी॥
उठहु सकल जन प्रात भई है।
सोवतही सव रात गई है॥ ३॥
प्रथम लेहु ईश्वरकर नामा।
जातें सिद्ध होहिं सव कामा॥
पुनि तुम आप विचारहु मनमें।
अवश काम मेरे को दिनमें ?॥ ४॥
उचित होय ताको पुनि करहू।
उठहु उठहु जनि सोवत रहहू॥
पक्षीगण इम नरहिं चितावें।
हितकारी सव काम वतावें॥ ५॥

दोहा।

पवन स्वर्गकी चलत है, प्रात समय सुखकन्द।
सो लहि प्रफुलित होतमन, उपजत अधिक अनन्द॥
प्रातसमय उठि जाय जो, वन उपवन वर बाग।
हरित पत्र फल कुसुम लखि, उपजत अति अनुराग॥

पाठ ८ वा

## माता पिताकी आज्ञा मानना.

किसी नगरमें एक महाजन रहता था, उसके दो लडके थे. एकका नाम सुन्दरलाल और दूसरेका वशीधर लडकोंकी माताका दोनोंपर बडा भारी प्रेम था, इसलिये वह सदा इनके लालन पालनमें दत्तचित्त रहती और रत्तमात्र कष्ट नहीं होने देतीथी पिताभी प्यार रखता था,परन्तु वह जानता था कि, अधिक लड़ानेसे लडके बिगड जाते हैं, इसलिये उन्हे सदा कहा करता कि, बेटो! पढना लिखना सीख लोगे तो अपनी जिन्दगी आरामसे काटोगे नहीं तो कोई पूछेगा भी नहीं, इसलिये पाठशालामें रोज पढ़नेको जाया करो,परन्तु इसपर सुदरलालने बिलकुल ध्यान नहीं दिया "वह घमडसे अपने दिलमें सोचने लगा कि, मेरे घरमें इतना धन है जो घर बैठे २ खाऊ तौ भी आरामसे अपनी जिन्दगी बिताऊ मुझे पढ़ने लिखनेके व्यर्थ

परिश्रम करनेसे क्या लाभ ?" ऐसा सोच उसने पढ़ने लिखनेपर कुछभी ध्यान नहीं दिया.

छोटे लड़के वंशीधरने जो बहुत सुशील और समझदार था, यह सोचकर कि, "माता पिताकी आज्ञा माननेसे कुछ न कुछ लाभ अवश्य ही होगा" पाठशालाको जाना प्रारंभ कर दिया और परिश्रम करनेसे वह थोड़े ही दिनोंमें पढ़ लिखकर होशियार होगया, परन्तु सुन्दरलाल मूर्खका मूर्खही बना रहा.

कुछ दिन बीतने पर एक साल व्यापारमें बड़ाभारी टोटा पडा जिसमें कि इनका घर द्वार सब जाता रहा और पेट भर भोजन मिलनाभी कठिण होगया, ऐसी आपत्तिके समयमें वंशीधर जो हिसाब किताबके काममें चतुर था एक सेठकी दूकान पर गुमास्ता होगया जिससे कि उसका उदर निर्वाह अच्छी तरहसे होने लगा और थोडेही दिनोंमें सेठने ईमानदारी और चतुराईसे खुश होकर उसे अपनी दूकानका मुनीम बनादिया.

सुदरलाल जो कि निरामूर्ख था निरुद्योगी होनेसे भूखों मरने लगा उसने अपनी बाल्या वस्थामें कोईभी ऐसी शिक्षा ग्रहण नहीं की थी, जिससे पेट भरनेका कोई उपाय करसके; वह फटे हाल होकर पेटकी ज्वालासे दग्ध हो भिक्षा मागने लगा

अपने बडे भाईकी ऐसी हालत जब वशीधरने सुनी, तब उसी समय बुलाकर अपनेपास रक्खा और बडी सेवा शुश्रूषा की वशीधरके इन अपूर्व गुणोंसे मोहित होकर सुन्दरलालसे न रहा गय वह बोलउठा कि, भाई ! तेराही जीवन सफल है जो विद्या और विनयसे परिपूर्ण है, हाय ! मैंने तो अपने पिताकी आज्ञा न मानकर मूर्ख रहके अपनी यह दुर्दशा की

बालको ! इस कहानीसे यह शिक्षा लेनी चाहिये कि अपने मातापिताओंका कहना माननेसे और चित्त लगाकर पढनेसे वडे होनेपर बहुत सुख मिलता है, और जो नहीं मानता ओर विद्या नहीं

पढता उसको सुन्दरलाल सरीखी भिक्षा मागनी पड़ती है

---

पाठ ९ वॉं.

## जड़पदार्थ.

अजीव अर्थात् जड पदार्थोंके मुख्य दो भेद हैं एक मूर्तिक दूसरे अमूर्तिक. अमूर्तिक पदार्थ जो आकार रहित होतेहैं उनके भेद तथा गुण अधिक सूक्ष्म रहनेके कारण बालकोंकी समझमें नहीं आसक्ते हैं, इसलिये उन्हें छोड़कर यहा मूर्तिक पदार्थों-काही वर्णन करते हैं

मूर्तिक जडपदार्थ उनको कहते हैं कि, जिनके रूप ) रग ) रस ( स्वाद ) गन्ध ( वास ) और रपर्श ( त्वचा ) इन चार गुणोंको इन्द्रिया अच्छी तरहसे जानसकें हम किसी २ जड़ पदार्थके इन चार गुणोंमेंसे कोइ २ गुणोंको इन्द्रियोंसे ग्रहण नहीं कर सक्ते हैं तोभी इन चारों गुणोंमें परस्पर

ऐसा सम्बन्ध है कि, जिस पदार्थमें एक गुण स्पष्ट होगा उसमें अन्य तीन गुणभी अवश्य होंगे. इस अजीव पदार्थको कोई २ जड और पुद्गल भी कहतेहैं यह पुद्गल ६ प्रकारका है, एक वह जिसके टुकडे हुए पीछे फिर अपने आप नहीं मिलसक्ते जैसे धातु, पत्थर, काष्ठ आदि, दूसरे वह जो अलग २ होकर फिर मिल जावें जैसे पारा, घीव, तेल, जल आदि, तीसरे धूप, छाया, चादनी आदि सरीखे सूक्ष्म पदार्थ जो पकडे नहीं जासकें, चौथे सुगन्धि, दुर्गंधि, हवा सरीखे पदार्थ जो दिखाई नहीं देवें, पाचवें वे छोटे परमाणु ( कण ) जिनसे फिर छोटे न हो सकें, छठवें कई परमाणुओंके स्कन्ध ( पिण्ड ) हों, परन्तु नेत्रादि इंद्रियोंसे जाने नहीं जावें

इन सब पुद्गलोंमें अनन्त ( बेशुमार ) शक्तिया हैं, जिनके द्वारा अनेक कारण मिलाकर अनेक पदार्थ बनाये जासक्ते हैं, इस बातको पदार्थ-विद्या ( सायन्स ) और रसायन विद्या ( कैमिष्ट्री ) के जाननेवाले अच्छीतरह जानते हैं. रेल, तार

फोनोग्राफ, बिजली आदिक विचित्र काम इन्हीं पुद्गलों की शक्तियों से परिष्कृत (तयार) हुए हैं.

इन पदार्थोंमें मूल तीन शक्तिया हमेशा रहती हैं. १उत्पाद अर्थात् किसी अवस्थाका उत्पन्न होना. २ व्यय अर्थात् किसी अवस्थाका नाश होना. ३ ध्रौव्य अर्थात् किसी अवस्थामें मौजूद रहना, जैसे एक लकडी थी, वह अग्निके निमित्तसे जलकर भस्म हो गई यहा लकडीकी अवस्थाका तो (व्यय) नाश होताहै और कोयला की अवस्थाका उत्पाद (उत्पत्ति होना) होताहै तथा कोयलेके रूपमें वही पुद्गल पदार्थ ध्रौव्य (मौजूद) रहताहै इसी प्रकार सब पदार्थोंमें जानना

पाठ १०

## नीतिबोध.

अपने घर यदि कोई पाहुनाआवे तो उसे आदर पूर्वक बिठलाना चाहिये, यदि पूज्य होवे तो उसके पाव धोना चाहिये नहीं तो पाव धोनेको जल ला देना

चाहिये फिर कुछ फलाहार कराके कुशलक्षेम पूछना चाहिये, और वह जो कुछ पूछे उसका यथा योग्य उत्तर देना चाहिये, पीछे सत्कारपूर्वक भोजन कराना चाहिये.

प्राणीमात्रसे नम्रता, दूसरेको दोष न देना, क्षमा, धैर्य्य, मित्रका अपमान न करना, ये गुण मनुष्योंके आयुको बढाते हैं कुमार्गमें कितनी द्रव्य खर्च हुई इसका विचारकर जो सावधान होता है और अवशेष द्रव्यकी सदाचारसे रक्षा करनेकी जो इच्छा करताहै उसे स्याना समझना चाहिये

जो कर्म घृणित उपायोंसे कियाजाता है उसका परिणाम ( फल( भी घृणित होता है ऐसा निश्चय जानकर फिर घृणित कर्मोंकी ओर नहीं देखना जिस काममें जो साहित्य (सामान) चाहिये उसकी योजना पहिलेहीसे करनी चाहिये उतावलीसे किसी काममें हाथ मत डालो अपने इस उद्योगसे यह अन्ततक पहुँच जावेगा ऐसा पूर्ण निश्चयकर कार्य प्रारंभ करो.

पृथिवी सुवर्णपुष्पमय है इसके पुष्प ( फूल ) तीन पुरुष प्राप्त करसक्ते हैं. एक शूर, दूसरे विद्वान और तीसरे वे जो सेवा करके अपने स्वामीको प्रसन्न करना जानते हैं सुबुद्धिसे विचार पूर्वक किया हुआ कार्य श्रेष्ठ, लापरवाहीसे किया हुआ मध्यम और कपटसे किया हुआ अधम होता है.

मौन रहनेकी अपेक्षा सत्य बोलना उत्तम है. सत्य बोलकर प्रिय बोलना औरभी उत्तम और सत्य प्रिय होकर धर्मयुक्त बोलना सबसे उत्तम है.

धुला हुआ शुभ्र ( सफेद ) वस्त्र जिसरंगमें डालो उसही रंगको ग्रहण कर लेताहै. इसी प्रकार मनुष्य जैसेके साथ सहवास करताहै, उसीके गुणोंको धारण कर लेताहै मनुष्य साधुकी संगतीसे साधु, मूर्खकी संगतिसे मूर्ख और चोरकी संगतिसे चोर हो जाता है

पाठ ११

## स्वच्छता व सफाई.

जो बालक निरन्तर निरोगी और सुखी रहना चाहें उन्हें चाहिये कि, वे शरीर, वस्त्र और अपने बैठने उठने स्थानकी सदा सफाई रक्खें स्वच्छतासे शरीर आरोग्य रहनेके सिवाय औरभी कई फायदे होतेहैं, एक तो चित्त सदा प्रसन्न रहता है, दूसरे चित्तमें किसीप्रकारकी ग्लानि नहीं रहती, तीसरे निर्म्मल चित्तसे विद्याभ्यास शीघ्रतासे होताहै, परन्तु मैलेपनसे बुद्धि मलिन रहती है, लोग सत्कार नहीं करते, बल्कि मैलेपनके कारण लोग पास बिठलाने तकमें हिचकने हैं, और नानाप्रकारके रोग उत्पन्न होते हैं

यदि तुम अपने शरीरको ध्यानसे देखोगे तो मालूम होगा कि, प्रत्येक रोमके स्थानमें अर्थात् जहासे रोम निकलता है एक २ छेद रहता है जैसे शरीरके अन्यान्य भागोंसे मलमूत्रादिक बुरे पदार्थ निकलते हैं उसीप्रकार इन रन्ध्रोंमेंसे पानी सरीखा

पदार्थ जिसको पसीना कहते हैं निकलता है, यह भी एक प्रकारका मैल है. यदि किसी मनुष्यको दो चार दिन मलमूत्रादि मोचन न होवे तो वह बीमार हो जाता है और जबतक उसके दस्त पेशाब बराबर न आलेवे उसके जीवनमें सन्देह रहता है. ठीक इसीप्रकार मनुष्य पसीनाके न आनेसे रोगी और दुःखी हो जाता है इसलिये पसीनाका आना एक आवश्यकीय (जरूरी) विषय है.

मैला शरीर रखनेसे जिन रन्ध्रोंमेंसे पसीना निकलता है वे बन्द हो जाते हैं क्योंकि उनपर मैल चिपट जाता है इसलिये वे रन्ध्र कभी बन्द न हो जावें इस तरह रहना चाहिये

शरीर निर्म्मल रखनेके लिये प्रतिदिन स्वच्छ पानीसे स्नान करना चाहिये, स्नान करनेके बाद शरीरको स्वच्छ और सूखे कपडेसे पोंछ डालना चाहिये क्योंकि यदि कपडा मैलाहोगा तो उसका मैल छूटकर पसीनेके छिद्रोंमें भर जावेगा निरोगी और हृष्टपुष्टको ठंडे पानीसे तथा रोगी और निर्बल पुरु-

पकी, गर्म पानीसे स्नान करना चाहिये, रोगावस्थामें केवल गीले कपडेहीसे शरीर पोंछ डालना हितकर होता है

पहिरने ओढ़ने और बिछानेके कपडेभी स्वच्छ रहना चाहिये और वे ज्यादासे ज्यादा १५ दिनमें एकबार अवश्य धुलना चाहिये यदि धोबी वगैरहकी प्राप्ति न हो तो अपने हाथसे थोडीसी साबुन या सज्जीसे धोकर पसीनाका मैल तो अवश्यही धोडालना चाहिये

रहनेके मकानकी सफाईपर पूरा ध्यान रक्खा जावे मकानके चारोंतरफ कूडा कचरा वगैरह इक्ट्ठा न होने पावे, क्योंकि इसके रहनेसे वायु बिगड जाती है और यह बिगडी वायु बहुत हानिकारक होती है मकान रोज झाडूसे साफ किया जावे, दूसरे दिन गोवरसे लीपा जावे. और पन्द्रहवें दिन छुई अथवा चूनासे पोता जावे गोवर और चूनासे वायुमें विषहरे जन्तु नहीं रहने पाते, इसकारण ये पदार्थ बहुत लाभकारी होतेहैं.

जिससमय शरीरपर पसीना आवे उसमें ठंडी ना नही लगने देना चाहिये, परन्तु सूखे कपडेसे

पोंछ डालना चाहिये, क्योंकि पसीना शरीरपर सूख जानेसे मलिनता और दुर्गंध पैदा करता है. इनसब बातोंके सिवाय और भी जिन २ बातोंसे स्वच्छता रह सक्ती है उनको वर्तावमें लाना चाहिये.

पाठ १२.

## कपोत और चींटी.



एक चीटी प्यासके वश हो एक निर्मल ठंडे जलके सोते ( झरने ) के निकट गई और पीते समय अचानक उसमें गिर पडी. उस बिचारीने बहुत चाहा कि, मैं पानीमेंसे निकल आऊं, परन्तु निकल न सकी, उसी सोतेके समीप ( नजदीक ) के वृक्षपर एक कपोत बैठा हुआ उसकी यह दशा देख रहाथा जब उसने जान लिया कि, अब चींटी डूब जायगी, बचेगी नहीं, तब उससे न रहा गया और एक टहनी ( शाखा ) पानीमें चींटीके पास डालदी. उसके सहारेसे परिश्रम करके वह चींटी सूखे में निकल आई कुछ दिन पीछे वहा एक व्याध

( वहेलिया ) आ निला और उसने कपोतको देखकर पकडनेके लिये अपना जाल फैलाया पर कपोत बिचारा यह बिलकुल नहीं जानता था कि, कोई मेरे लिये जाल फैलारहा है, परन्तु वह चींटी जिसे कपोतने बचाया था पहिचान गई कि, अब मेरा उपकार करनेवाला फँसा चाहता है उसने व्याधके पास जाकर उसके पावमें ऐसा जोरसे काटा कि, वह एकदम चौंक पडा और कपोत उसके चौंकनेसे डरकर उड गया

बालको ! इस कहानीसे यह शिक्षा लेनी चाहिये कि, छोटे से छोटा जानवरभी काम पड़े बडेकी मदद कर सक्ता है, इसलिये कीडीसे लेकर मनुष्य तक सब प्राणियोंके साथ जहा तक बने उपकार करे, क्योंकि, भलाईका फल भलाही होता है

पाठ १३

## विद्या ( पद्यमें. )

अपावन ठौर–घृणितगह कचन–सोना
चर्धवत्–बैलके समान. अमान–विना आदरके

| | |
|---|---|
| लेज—रस्सी | अघ—पाप |
| पाय—(पांव) चरण | असन—भोजन. |
| अळप—थोडा. | कलमष(कल्मष)—पाप |
| रिपु—शत्रु | क्लेश—दुःख |

दोहा।

उत्तम विद्या लीजिये, यदपि नीचपै होय।
परौ अपावन ठौरमें कंचन तजत न कोय॥ १॥
सुख चाहो विद्या पढो, बिन विद्या सुख नाहिं।
सुख अरु विद्या दोउको, एकहिसे नर पाहिं॥ २॥

समह

जिन्हें न आवै पढ कछू, ते नर पढे अजान।
विन सींगनके वर्धवत्, गरजत फिरें अमान॥ ३॥
एक चरणहू नित पढै, तो काटे अज्ञान।
पनिहारीकी लेज सों, सहज कटै पापान॥ १॥
याभव यश परभव सुखी, निरभय रहै सदीव।
पुन्य बढावै अघ हरे, विद्या पढके जीव॥ २॥
राज चोर डरपत धनी, धन खरचत घट जाय।
विद्या देते अति बढै, नरपति बन्दै पाय॥ ३॥
चार गतिनमें मनुषको, पढवेको अधिकार।
मनुष जनमधर नापढे, तिनको अतिधिःकार॥ ४॥

पुस्तक-गुरु-थिरता-लगानि, मिलहिं सुथान सहाय।
तब विद्या पढिवो बनैं, मानुषकी पर्याय ॥ ५ ॥
जो पढ करै न आचरण, नाहिं करै श्रद्धान।
ताको पढिवो बोलिवो, काग वचन परमान ॥ ६ ॥
रिपुसमान पितु मातु जो, पुत्र पढावैं नाहिं।
शोभा पावें नाहिं सुत, राजसभाके माहिं ॥ ७ ॥
अल्प असन निद्रा अलप, खेल न देखै कोय।
आलस तज घोखत रहै, तब सुजान सुत होय ॥ ८ ॥
धन तें कलमष ना कटै काटै विद्याज्ञान।
ज्ञान विना धन क्लेशकर, ज्ञान एक सुख खान॥९॥
जो सुख चाहै जीवको, तो बुधजन ! या मान।
ज्यों त्यों मर पढ लीजिये, गुरतें उत्तम ज्ञान ॥ १ ॥

'बुधजन'

---

पाठ १४

## प्रामाणिकपनेका फल

किसी बडे शहरके बाजारमें दो लडके पास २ दूकानें रखकर बैठते थे उनमेंसे एक नारियल और दूसरा सुपारी बेचता था एक दिन एक भला आदमी

नारियलवालेकी दूकानपर गया. उस दिन उसके थैलेमें विक्रीसे बचे हुए पाँच सात खराब नारियल ही थे, उनमेंसे एक नारियल उठाकर ग्राहकने पूछा लडके ! यह कितनेका है? लड़केने कहा साहिब ! आज नारियल केवल खराबही खराब रह गये हैं आपके लेने लायक़ नहीं हैं. फिर उनका भाव आपसे क्या कहू ?

थैलेमेंसे औरभी नारियलोंको उठाके और उन्हें देखके ग्राहक बोला तो मुझे यह नहीं चाहिये. पर लड़के ! अपने मालको आपही खराब कहकरभी कोई व्यापार करता है ?

नारियलवाला—साहिब ! व्यापार हो चाह न हो, परन्तु सत्य बोलने सरीखा आनन्द दूसरी बातोंमें नहीं है

ग्राहक—ठीक है भाई ! ईश्वरकी कृपासे तू सबका प्यारा होवे और तुझे इस व्यापारमें बरकत होवे अब मैं हमेशा तेरेही यहासे सौदा लिया करूंगा.

इसके पीछे वह ग्राहक सुपारीवालेके पास गया. सुपारी ऊपरसे बहुत अच्छी और चोखी दिखतीथीं,

परन्तु यथार्थमें वह बिलकुल निकम्मी थीं सुपारी वालेने यह बात ग्राहकको जाहिर न करके भाव वगैरह ठीक करके बेच दीं, ग्राहक सुपारी लेकर अपने घर चला गया पश्चात्—

सुपारीवाला—अरे नारियलवाले! तू कितना मूर्ख है जो ग्राहकसे अपने मालको बुरा कहकर बेचा नहीं मेरी सुपारीं देख। कैसीथीं, परन्तु मैं कुछ बोला नहीं, और वह खरीद करलेगया समझा!

नारियलवाला—हा भाई! तूने ऐसा किया, परन्तु यह अच्छा नहीं मैं तो कभी झूठ बोलनेवाला नहीं यद्यपि आज मेरा एक नारियल नहीं बिका, परन्तु उसको मैंने अपना एक सदाका ग्राहक बना लिया और अब आजसे वह तेरी दूकानपर खडाभी नहीं होगा,

आखिर ऐसाही हुआ, नारियलवाला लड़का अपनी ईमानदारीसे बढते २ बडा भारी व्यापारी होगया, और उसने बहुतसा द्रव्यभी जोड लिया, परन्तु सुपारीवाला लडका लोगोंको झूठा मालूम होनेसे कुछ दिनोंमें भीख मागने योग्य हो गया.

## पाठ १५.

## हलका और भारी.



जिस पदार्थको सरलतासे ऊपर उठा सक्ते हैं उसे हलका और जिसके उठानेमें कठिनता पड़े उसे भारी कहनेकी परिपाटी है हम कपासको हलका और लकड़ीको भारी कहते हैं, परन्तु यह कहना दूसरी वस्तुकी अपेक्षासे होता है और सदा एकसा नहीं रहता,

कपास हलका है ऐसा हम कहते हैं, परन्तु यदि कोई पुरुष पूछे कि, "हवा हलकी है या कपास?"तो हम कहेंगे कि,हवा हलकी और कपास भारी। इसी प्रकार "लकडी हलकी कि लोहा"? ऐसा यदि कोई पूछे तो कहना पडेगा कि,लकडी हलकी और लोहा भारी इसीप्रकार और सब पदार्थोंको समझना,

तो अब हलका और भारी कहना पदार्थोंके वजनपर कायम रहा एकहाथभरकी लकडीका एक टुकडा लाओ, उसीके बरावर लम्बी तथा मोटी एक लोहकी छड़ लाओ यदि दोनोंको देखोगे तो

लोहेकी छडका वजन ज्यादा होगा, क्योंकि लकडीके टुकडेकी अपेक्षा लोहेकी छडमें परमाणु (कण) बहुत हैं लकडीके टुकडेमें कण दूर २ और ढीले रहते हैं परन्तु लोहेके कण अत्यन्त नजदीक २ ठँसे हुए रहते हैं, इसीलिये दोनों पदार्थोंका आकार और मिकदार बराबर होनेपरभी उनमें कण न्यूनाधिक ( घटबढ ) हैं और उन्हींके अनुसार उनका वजन न्यूनाधिक है

हलका और भारी पदार्थ मिलानेसे भारी पदार्थ नीचे जाता है और हलका ऊपर रहता है किसी बर्तनमें बाजरा और लोहेकी गोलिया भरके यदि हिलाओगे तो गोलिया नीचे रहकर बाजरा ऊपर आजावेंगे क्योंकि लोहा भारी और बाजरा हलका होता है तैल और पानीको बर्तनमें मिलानेसे पानी नीचे और तैल ऊपर आजाता है, क्योंकि पानी भारी और तैल हलका होता है

---

पाठ १६.

## बाल्यावस्था

दुर्लभ विद्यारत्नका मिलना बाल्यावस्थामेंही

हो सक्ता है अन्य तरुण ( जवानी ) और वृद्धावस्थाओं ( बुढ़ापे ) में नहीं. क्योंकि बाल्यावस्था सरीखी स्वच्छन्द ( आजाद ) निर्द्वन्द और चिन्ता रहित अवस्था दूसरी नहीं है और विद्या विन निश्चिन्तताके आ नहीं सक्ती सो जिन तरुण और वृद्ध दशाओंमें सासारिक सैकड़ों बखेडे सिरपर आपडते हैं, कुटुम्ब और परिग्रहकी चिन्ताग्निसे सरीर जलता रहता है दिनरात जीविकाकी चिन्ता रहती है, उनमें विद्या देवीका प्रवेश कैसे हो सक्ता है. विद्यार्थी अवस्थामें मार, तिरस्कार, कुवचनादि समय २ पर सहना पडते हैं, उन्हें बालकही सहन करताहै और उनकी कुछभी परवाह न कर अभ्यासमें मग्न रहता है, परन्तु यह अपमान वृद्ध और युवा ( जवान ) पुरुषोंको सहन नहीं होसक्ता. और इसी कारण वे विद्याभ्यास करना छोड़ बैठते हैं. बालकको केवल विद्याभ्यासकीही चिन्ता रहतीहै. उसको न तो कमानेकी चिन्ता है, न खानेकी चिन्ता है और न कुटम्बके झगड़ोंकी. इसी कारण वह

शीघ्रही विद्या पढ़सक्ताहै, परन्तु दूसरी अवस्थाओंमें ये बातें नहीं रहतीं, जैसा ऊपर बतलाचुके हैं

विद्याका मुख्य साधन ध्यानका जमाना है, और उसका जमना विना निश्चिन्तताके हो नहीं सक्ता, इसी कारण विद्याके लिये बालकाल मुख्य रक्खाहै बालपनेमें ध्यान सहजही जम जाता है

जो बालक यह अपनी अमूल्य अवस्था विना विद्याके पढ़े केवल खेलकूद लड़ने झगड़नेमेंही खोदेते हैं वे बडे मूर्ख हैं, जैसे कोई पुरुष एक रत्नको पाकर काचके बदलेमें बेच देवे, उसी प्रकार यह बालक अपने बालपनेरूपी रत्नको खेल-कुद रूपी काचके टुकडोंमें बेच देते हैं और फिर जवानीमें पश्चाताप करतेहैं कि, हाय ! हमने अपने मातापिता व गुरुओंका कहना मानकर पढ़ा नहीं, परन्तु फिर पछतानेसे क्या हो सक्ता है ।

का वर्षा जब कृषी सुखाने ? ।
समयचूक पुनि का पछताने ? ॥

पाठ १७

## भोजन.

शरीरको बलवान और पुष्ट रखनेके लिये अच्छा भोजन आवश्यक है संसारमें जीते रहने और दैहिक ( शरीर सम्बन्धी ) सुख भोगनेके लिये भोजनही एक सामग्री है जो प्रत्येक प्राणीके नित्य काममें आती है, एक डग रखने और एक शब्द कहनेसे हमारे शरीरका कुछ न कुछ भाग कम होजाता है. और उसकी कमी भोजनसे पूर्ण होती है. सारे दिनके परिश्रमकी कमीभी भोजनहीसे पूर्ण होसक्ती है इसलिये भोजन करना एक आवश्यक कार्य है.

बहुधा देखा जाता है कि, कई मनुष्य भोजन करनेसे रोगी होते हैं और कई निरोगी रहते हैं सो ऐसा होनेमें भोजनके नियमही कारण होते हैं, इस-लिये प्रत्येक भोजन करनेवालोंको निरोगी रहनेके लिये नीचे लिखे नियमोंपर ध्यान देना चाहिये.

१ जो कुछ भोजन सामग्री हो वह प्राशुक(ताजी) और शुद्ध हो, रक्खी हुई और सड़ी हुई वस्तुओंके

खानेसे अनेक प्रकारके रोग होजाते हैं कई पदार्थ जैसे आटा बेसन मैदा आदि ऐसे हैं कि वह यदि ५-७ दिन रक्खेरहें तो उनमें लट पडजाते हैं और फिर अभक्ष्य हो जाते हैं दूध घी आदि पदार्थोंमें बेचनेवाले पानी और आलु वगैरह चीजोंका सयोग कर देते हैं जो अशुद्ध होनेके सिवाय बहुत हानिकारक होतेहैं इसलिये पदार्थोंकी शुद्धतापर विशेष ध्यान रहे.

२ भोजन अच्छीतरहसे पचा हुआ होना चाहिये क्योंकि कच्चे भोजनको हजम करनेमें पेटको बडा परिश्रम पडता है और जिसकी जठराग्नि मन्द होती है, उसको हजम न होकर अजीर्ण ( बदहजमी ) का रोग हो जाता है

३ पहिलेके खाये हुए भोजनको हजम होजानेपर दूसरा भोजन करना चाहिये और प्रत्येक भोजनमें कमसेकम ६ घटेका अन्तर होना चाहिये

४ बिना भूखके कभी न खावे, क्योंकि भरे पेटमें दूसरा भोजन जहरका काम करता है अकसर देखा जाता है कि, पाहुनेको प्रसन्न करनेकेलिये

लोग जबरदस्ती बिना भूख भोजन कराते हैं. और जब वह बीमार होजाताहै तब दुखित होतेहैं. सो ऐसा करना बडी मूर्खता है. पाहुनेके साथ यथार्थमें यह शत्रुताका काम किया जाता है.

५ परिमाणसे ज्यादा कमी न खावे बल्कि सदा निरालस और निरोगी रहनेके लिये भूखसे एक रोटी कम खाना चाहिये, प्रायः लोग घरपर तो आधसेर खाते हैं, परन्तु जब किसीके यहासे निमत्रण(न्योता) आता है तो मिष्टान्नादि मिलनेसे डेढ सेरपर हाथ फेरते हैं, यद्यपि वह शरीरको हृष्टपुष्ट और सुखी रखनेके लिये ऐसा करते हैं, परन्तु इसके विरुद्ध वह रोगी होकर दु.ख भोग निर्बल होजातेहैं सो ऐसा कभी न करना चाहिये, प्रतिदिन जितने वार और जितना खातेहो भूखके अनुसार उतनाही खाओ

६ दो बार थोडा २ खाना अच्छा, परन्तु एक बार भूखसे अधिक खाना अच्छा नहीं.

७ कन्दमूल और साग आदि पदार्थ रोग पैदा करनेवाले होते हैं इसलिये इनको कम खाओ.

कच्चे और सडे फलोंसे सदा बचे रहो अच्छीतरहसे पका हुआ फल खाना लाभकारी होता है

८ रात्रिको भोजन करना वैद्यक शास्त्रके वहिर्भूत है जो मनुष्य सदा दिनको भोजन करतेहैं वह अधिक निरोगी रहते हैं

९ जिसघरमें भोजन बनाया जावे वह बहुत साफ और सुथरा होना चाहिये आसपासमें कूड कचरे और दुर्गन्ध होनेका कोई द्वार होना चाहिये

१० रोगी शरीरमें वैद्यकी आज्ञाके अनुसार निरस और हल्का भोजन करना चाहिये तथा निरोगी शरीरमें सुन्दर पुष्टिकर भोजन करना चाहिये पुष्टिकर भोजन बनानेमें कुछ अधिक खर्च नहीं पडता चना, अरहर, उडद, मूँग आदिकी दालमात्रमेंही पुष्टिकर शक्ति मौजूद है इनमें थोडा घी अथवा तैल मिलाकर खानेसेही उत्तम आहार होसक्ताहै दूधमें सब प्रकारके पुष्टिकर पदार्थ हैं, इसको जहातक बने अवश्य खाना चाहिये गेहूँ, बाजरा, यव (जौ)

आदिकी रोटी घृत व शक्करसहित खानेसेही यथेष्ट लाभकारी होसक्तीहै.

११ भोजनको सुस्थिर निश्चिन्त होकर संतोष पूर्वक करना चाहिये प्रतिदिनकी विगार समझ जैसे तैसे पेट भरलेनेकी गरजसे नहीं, जो भोजन अच्छी तरह कियाजाता है उसका पाक अच्छा होकर शरीरको सुखकारी होताहै

पाठ १८

## नीतिके दोहे.

| | |
|---|---|
| नंदनवन–इन्द्रका बगीचा | वघ–पापोंका समूह. |
| मोप–मोक्ष | बल्लरी–वेल |
| गिरिराज–पहाड | व्यवसायी–रोजगारी |
| भव–जन्म | कृतकरम–किये हुए कर्म |
| सोर–रजाई | अजान–मूर्ख |

त्रिष्णा दुखकी खानिहै, नंदनवन संतोष।
हिंसा वघ वढ़ावनी. दयादायनी मोष ॥ १ ॥
लोभ पापको बाप है, क्रोध क्रूर जमराज।
माया विपकी वल्लरी, मान विषम गिरिराज ॥ २ ॥

सुखदुख कर्त्ता ईश है, यह कुबुद्धि श्रद्धान ।
कर्त्ता तेरे कृतकरम, मैटे कौन अजान ? ॥ ३ ॥
सुख दुख विद्या आयु धन, कुल बल अरु अधिकार ।
साथ गर्भमें अवतरें, देह धरे जिहि वार ॥ ४ ॥
कुलकी शोभा शीलतें, तन सोहै गुणवान ।
पढिवौ सोहै सिधिभये, धन सोहे दिये दान ॥ ५ ॥
जातें कुल शोभा लहै, सो सुपूतवर एक ।
भार भरे रीडी चरै, गदर्भ भये अनेक ॥ ६ ॥
एकाक्षर दाता गुरू, जो न गिनै अज्ञान ।
सोपावै चडालभव, कै सूकर कै स्वान ॥ ७ ॥
व्यवसायीनें दूर क्या ?, का विदेश विद्वान ? ।
कहा भार समरत्थको ? मिष्ट कहा का गान ? ॥८ ॥
बिन जानें कुल शीलके, नहिं कीजे विश्वास ।
तात मात जातें दुखी, ताहि न राखिये पास ॥ ९ ॥
येता आरम कीजिये, जेता तनमें जोर ।
येते पात्र पसारिये, जेती लागी सोर ॥ १० ॥

बुधजन

## पाठ १९
## " संसार दर्पणके समान है. "



किसी नगरमें एक महात्मा साधु रहतेथे, उनकी बैठक ऐसे स्थानपर रहतीथी, जहासे सब लोगोंके आने जानेका मार्ग था. इनको नगरमें आये थोडेही दिन हुए थे, इसलिये लोगोंको अधिक परिचय नहीं था तोभी जो पुरुष गुणग्राही थे वह दश पाचही दिनमें परीक्षा कर इनके सच्चे सेवक हो गये थे और उनकी सेवामें हमेशा हाजिर रहा करते थे एक दिन जब महात्मा अपने सेवकों को कुछ उपदेश दे रहे थे एक आदमी वहासे निकला उसने साधुको देखकर अपने साथीसे कहा " देख ! कैसी सुन्दर सौम्य और दर्शनीय मूर्ति विराजमान है " इतना कह कर वह तो चला गया. यहा साधुजीने उक्त बात सुन कर कहाकि "भाई सच कहता है" इसके पश्चात् थोडीही देरमें एक दूसरा आदमी निकला, वह साधुको देख अपनी नाक भौंहें सिकोडकर साथीसे बोला "देखो ! लोगोंके ठगनेके लिये कैसी वाहियात सूरत

बनाये बैठा है" और चलागया इस बातकोभी सा धुने सुनी और पहिले कीही माफिक बोलेकि "सच कहताहे भाई!" ऐसी विषम बातें साधुजीकी सुन कर सेवकोंने पूछा कि, महाराज! आपकी जिसने प्रशंसा (तारीफ) की उससे कहा 'सच है' और जिसने निन्दा की उससेभी कहा 'सचहै' इसका कारण क्या है? साधुने उत्तर दिया, भाइयो! यह संसार दर्पण (ऐना) के समान है इसमें जो कोई जैसा होताहै उसे सब वैसाही दिखता है यदि मनुष्य स्वतः अच्छाहै तो उसे दूसराभी अच्छा दिखेगा और जो स्वयं बुरा होगा उसे बुराही दिखेगा पहिला पुरुष एक सज्जन और भला आदमी था तो उसे मैंभी भला आदमी दिखा और दूसरा ठग तथा बदशकल (कुरूप) था उसे मैंभी बुरा और ठग दिखाई दिया फिर मैंने क्या झूठ कहा बतलाओ? सेवक जन इस बातको सुनकर बहुत प्रसन्न हुए

विद्यार्थियोंको इस कहानीसे यह शिक्षा लेना चाहिये कि, बिना समझे बूझे तथा परीक्षा किये किसीकोभी भला अथवा बुरा न कहैं तथा दूसरोंको भला

बुरा कहनेके पहिले उन्हें स्वयं अच्छा बननेका प्रयत्न करना चाहिये यदि वे अच्छे होंगे तो उनके अनुकूल सब संसार होजावेगा और तब उन्हें सब भले ही भले दिखने लग जावेंगे.

पाठ २०

## नम्रता.

संध्याके समय किसी जङ्गलमें बाप और बेटा दोनों चले जारहे थे, लडका जोकि आगे २ दौडता जाताथा एक जगह खडा होकर बोला पिताजी ! यह इतना बडा बडका झाड कैसा जडसे उखड गया है. बापने उत्तर दिया बेटा कल रातको जो प्रचंड आंधी चलीथी उससे. थोडी दूर चलकर लडका फिर बोला, परन्तु पिताजी ! यह बेतका झाड़ जो बिलकुल पतला और नाजुक है इस आंधीसे क्यों नहीं गिरा ? तब बाप बोला बेटा ! बडका बडप्पन और घमंड ही उसके गिरनेका कारण हुआ, क्योंकि जिस समय प्रबल वायु चलती वह घमडके मारे उस वायुको कुछभी नहीं समझता

और जैसाका तैसा खडा रहता, परन्तु वेतका झाड हवाके आतेही नम्रतासे अपना माथा नवाता और कुछभी घमड नहीं करता इसीसे वह वच गया और वडका झाड आंधीने प्रकंपित होकर अपने अपूर्वबलसे शीघ्रही जडसे उखाडदिया इसको सुनकर लडका चुप हो रहा

प्रिय बालको! तुम्हें इससे यही शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये कि, संसारमें सबसे नम्र होकर चलो नम्रशील सज्जनोंकी नम्रताको देखकर महा अधम और दुष्ट लोगभी हानि नहीं पहुचाते और घमंड से सब ही लोग हानि पहुचानेको तयार रहते हैं देखो घमंडी बडका क्या हाल हुआ और नम्र वेतका क्या? यदि कोई पुरुष बडेगुस्सेसे तुम्हें मारनेको आवे और तुम उस समय यदि नम्रता ग्रहण कर कहो कि "ले भाई! तेरी इच्छाहै तो मारले" तो वह कभी न मारेगा और अपना क्रोध शांत करलेगा और यदि उस समय तुम और भी घमडकी वातें करोगे तो अवश्य ही वह मारेगा--इससे नम्रता सदा धारण करना चाहिये

## पाठ २१.
## चौपाये.

जो प्राणी चारों पावोंसे चलते हैं उन्हें चौपाये कहते हैं स्पर्शन, रसना ( जीभ ), नासिका, नेत्र और कान ये पाचों इन्द्रिया चौपायोंके होती हैं इस लिये चौपाये पंचेन्द्री हैं, चौपायोंके मुख्य तीन भेद हैं एक फटे खुरवाले अर्थात् जिनके पंजे फटे हुए होते हैं जैसे गाय, भैंस, भेड, बकरी, हरिण आदि, दूसरे सुमवाले अर्थात् जिनके पजे जुड़े हुए हों, जैसे घोडा, गधा, हाथी आदि. तीसरे नखवाले जैसे बाघ, सिंह, रीछ ( भालू ), कुत्ता आदि,

संसारमें जितनें पदार्थ हैं उनमेंसे कोई भी निरुपयोगी नहीं हैं, हरएक पदार्थ किसी न किसी कार्यमें आवश्यक होते हैं, मनुष्यके जीवननिर्वाहमें चौपाये बहुत सहायक होते हैं. बल्कि मनुष्योंका चौपायों के विना क्षणभर भी काम नहीं चल सक्ता. चौपाये जब तक जीते हैं तब तक हमारे सैकड़ों कामोंमें आकर अपने शरीरसे उत्पन्न किये हुए दुग्धादि सु-

न्दर मिष्ट पदार्थोंको देतेहैं और मरने पर अपने अ ङ्गो प्रत्यङ्गोसे मनुष्यके कई काम चलाते हैं. एक गायहीको देखो! जबतक वह जीती रहती है, अमृत तुल्य दूध देती है, गोबर करतीहै उससे मकान लीपनेका व ईंधनका काम चलाती है. उसके बैल जिन्दगी भर जोते जाकर नानाप्रकारके धान्य उत्पन्न कर जगतका पेट भरते हैं रथ, गाडी आदिमें सवारी और बोझा ढोनेका काम देते हैं और मरने पर हड्डियोंसे बटन, चाकुओंके बेंट, चमडेसे जूते, पूँछसे चमर आदि पदार्थ बनाये जाते हैं और तो क्या मरनेपर उनका मास तक नीच दुष्ट लोगों और पक्षियोंके काम आता है

चौपाये मनुष्योंके इतने उपकारी हैं तो भी खेद है कि, मनुष्य उनके साथ अमानुषी अत्याचार करके अपनी नीचता और कृतघ्नता दिखलाते हैं उन्हें नानाप्रकारके ताडन तापन आदि दुख देते हैं, समयपर खानेपीनेको नहीं देते, शक्तिसे अधिक उनके ऊपर बोझा लादते हैं, इसके सिवाय

कोई २ दुष्ट तो उनकी शिकार कर अपना पेटभर खुशी होते हैं. वे यह नहीं जानते कि, जैसे प्राण हमारे हैं वैसे दूसरोंके भी होतेहैं. और अपने उपकार करनेवालोंके साथ उपकार करना चाहिये या अपकार! यदि वे इतना जानते तो बिचारे गरीब पशुओंको जो अपना दुख किसीसे कह नहीं सक्ते,कभी पीडा नहीं देते हे बालको! तुम सदा दूसरे जीवोंको अपने समान जानो. तुम्हारे साथ जो भलाई करै तुमसे यदि उसकी भलाई करते नहीं बने तो बुराई भी मत करो कृतघ्नताके बराबर कोई पाप नहीं है.

## पाठ २२
## परिश्रम.



मनुष्यमात्रमें एक बड़ी भारी सामर्थ्य है कि वह कैसाही कठिन काम क्यों नहो सरलतासे कर सक्ता है, तोभी विना परिश्रमके एक छोटासा काम भी करना असंभव है, इसीसे जाना जाता है कि, सबका मूल कारण परिश्रम (महिनत) है, और यह

सबको उचित है कि, जहातक बने परिश्रम करें और अपने अमूल्य समयको व्यर्थ न खोवें.

परिश्रम करनेसे बडे २ कार्य बातकी बातमें हो जाते हैं, और वैसे तो साधारण लोगभी अपना२ पेट भर सक्ते हैं,परन्तु जो लोग परिश्रमी हैं वे अपने परिश्रमसे औरोंका भी उपकार करसक्ते हैं देखो ! मधुमक्खी जो एक छोटासा जीव है अपने दिन भरके परिश्रमसे मधु ( शहद ) बनाकर लोगोंका कितना उपकार करती है यदि वह इतना परिश्रम न करती तो मनुष्योंको ऐसी स्वादिष्ट और सबसे अधिक पौष्टिक वस्तु कहासे मिलती ? इसीसे जाना जाता है कि श्रमका फल मीठा होताहै

आज कल हमारे देशके लोग मधुमक्खियों की बराबरी करके दूसरोंका उपकार करना तो दूर रहो अपनाही उपकार नहीं कर सक्ते वे इतने आलसी हो रहे हैं कि, अपने खाने पीने उठने बैठने ओढ़ने बिछाने सम्बन्धी नित्य वर्तावकी चीजें भी नहीं बनासक्ते,उनका घर जाके देखो तो वहा सिवाय

विलायतकी बनी हुई चीजोंके दूसरी चीज ही नहीं मिलेगी और जो एक दो देशी होंगी भी तो वे ऐसी बेडाल तथा भद्दी होंगी कि, और देशों की चीजें उनकी हंसी करेंगी. हमारे देशके लोग समझते हैं कि, परिश्रम करनेसे क्या होताहै? हमारे तो विदेशी लोग नौकर लगे हुए है पैसे देकर जैसी चाहे चीज लेकर आनन्द किया, वे यह नहीं जानते कि, इस तरह करोड़ों रुपया हरवर्ष हमारे देशसे चला जाताहै, और हमारा देश जो किसी समय सबसे अधिक धनाढ्य गिना जाताथा आज भूखके मारे दुखी होरहा है. बड़े २ सेठोंके दिवाले निकलते जाते हैं, परन्तु जो इंग्लेंड महा असभ्य और भिक्षुक गिना जाताथा आज वही सभ्यशिरोमणि और सुवर्णमयी हो रहा है वहा नित्य नये २ सेठ बनते जातेहै. यदि अच्छीतरह विचारोगे तो जाना जावेगा कि, यह सब परिश्रमका खेल है. देखो ! परिश्रमसे विना घोड़े जानवरोंके आगी पानीहीसे हजारों कोस रेल दौड़ती है, तारसे हज़ारों

कोसकी बातें मिनटोंमें जानी जाती हैं, यदि अंग्रेज लोग परिश्रम न करते तो यह सब चमत्कार कहांसे देखनेमें आते ? आज वे इतने धनी होकर हजारों कोस पृथिवीके राजा क्यों हो जाते ? और यदि हिन्दुस्थानी परिश्रम करते तो परवशमें पड़कर ऐसे भिखारी क्यों होजाते ? यदि वे अपने देशके बने हुए वस्त्रादिकोंसे अपना निर्वाह करते तो यह करोडों रुपया पानीकीतरह क्यों बहाया जाता ? प्यारे बालको ! अब तुम्हारे चेतनेका समय है पढ़लिखकर सच्चे दिलसे अपने देशकी उन्नति करो, नये २ पदार्थोंको बनाकर देशके अभावोंकी पूर्ति करो, जिससे जरा २ सीतके लिये विदेशियोंका मुह न देखनापडे यदि तुमभी ऐसे आलसी रहे तो समझ रक्खो पेट भरना भी मुश्किल हो जायेगा

## पाठ २३

## स्वच्छजल.

जिस प्रकार भोजन और हवाके बिना मनुष्य जी

नहीं सक्ता उसी प्रकार पानीभी एक पदार्थ है जिसके बिना मनुष्यका जीवन नहीं हो सक्ता और इसीलिये पानीको संस्कृतमें **जीवन** कहते हैं. आरोग्य रहनेके साधनोंमें निर्म्मल पानीभी एक साधन बताया गया है इसलिये स्वच्छजलको उपयोग में लाना बहुत आवश्यक है.

बरसातके दिनोंमें जो पानी बरसता है वह बिलकुल शुद्ध होता है यदि उस पानीको जमीनमें गिरनेके पहिले एक कटोरेमें लेकर पीओगे तो तुम्हें मालूम पड़ेगा कि उसमें कुछभी स्वाद नहीं है, और यथार्थमें शुद्ध जलमें कुछ स्वाद नहीं रहता, परन्तु जमीन पर गिरनेसे उसमें नाना प्रकारके खनिज पदार्थ मिल जाते हैं. और इसीसे उसमें नानाप्रकारके स्वाद हो जाते हैं. जहा की जमीनमें नमक अधिक होता है वहाका पानी खारा होताहै और जहा नमक न हो वहा मीठा, परन्तु कुआ तालाब नदी आदि जलाशयोंका जो पानी मीठा होता है उसे शुद्धही नहीं समझ लेना चाहिये;

क्योंकि उसमें अनेक पदार्थ मिलचुके हैं. इन चीजोंके मिलनेसे चाहे वह दुर्गुणी नहीं हुआ हो, परन्तु निर्मल भी नहीं कहा जा सक्ता देखा जाता है कि, किसी २ जलाशयका पानी हल्का और पाचक होता है तथा किसी २ का भारी और गरिष्ठ इसका कारण यही है कि, एकमें हल्के और पाचक पदार्थोंका संयोग है और दूसरेमें भारी और गरिष्ठोंका इस लिये सिद्ध हुआ कि, जलाशयों का पानी बिल्कुल शुद्ध नहीं होता.

पानीको आगपर औंटानेसे उसमें के सब मिश्रित (मिलेहुए) पदार्थ जलकर तलीमें रह जाते हैं और वह शुद्ध होजाताहै, यह पानी अक्सर रोगी पुरुषोंको पिलाया जाता है, परन्तु जो पानी भारी और दुर्गुणी हो उसे तो सबही लोगोंको औंटाकर काममें लाना चाहिये, औंटाकर गाढे कपडेसे छाननेसे जले हुए पदार्थ निकल सक्तेहैं, जलमें प्राय कीडे देखे जाते हैं और उनमेंसे कोई २ जहरीलेभी होते है औंटा-कर पीनेसे इन कीडोंकाभी भय नहीं रहता, औंटा-

नेके पहिले पानीको कपडेसे छान लेना चाहिये. ऐसा करनेसे उसमेंके जीवोंके प्राण बच सकते हैं.

पानीको शुद्ध करनेकी दूसरी रीति—एक घडा आधी रेत और आधे जलसे भरकर तिपाई पर रक्खो और उसके ऊपर एक पानी भरा घड़ा जिसकी तलीमेंसे पानी टपकता हो रक्खो यह पानी टपक२के रेत और कोयलेमेंसे होकर नीचे जो एक घडा रक्खा है उसमें गिरने लगेगा कारण इसकी तलीमेंभी एक छेद है, सबसे नीचेके घडेमें गिरा हुआ पानी शुद्ध और निर्मल होता है इसे पीनेसे किसी प्रकारकी हानि नही हो सक्ती.

उक्त दोरीतियोंसे शुद्ध किया हुआ पानी यदि न मिलसके तो वस्त्रसे छानके तो अवश्यही पीना चाहिये नहरुआ रोग जो एक प्रकारके जलके कीडेसे होता है, जैनियोंको बहुतही कम होताहै. क्योंकि जैनी सदा छानके पानी पीते हैं, परन्तु अन्य लोगोंमें जो पानीको कभी छानके नहीं पीते नहरुआ अधिकतासे होताहै.पानी पीनेमें शुद्धताक

ध्यान रखनेके अतिरिक्त पीनेके लिये पानीका ध्यान रखना चाहिये.

१ जितनी तृषा हो उतना पानी पीवे अधिक पीनेसे जलोदर और कम पीनेसे अजीर्ण रोग होता है.

२ पानी सदा बैठके पीना चाहिये.

३ कसरत करके आकर तुरन्त पानी नहीं पीना चाहिये किन्तु थोड़ी देर स्वस्थ बैठकर गर्मी शान्त होनेपर.

४ भोजनमें तीनवार पानी पीना चाहिये, परन्तु भोजनान्तमें नहीं.

५ भोजनके पचानेके समय पानी औषधिका और प्रातःकाल सोतेसे उठकर पीनेसे अमृतका गुण करता है

६ पीनेके सिवाय स्नानादि कार्योंमें भी स्वच्छ पानीका उपयोग करना चाहिये

पाठ २४

## गुरुशिष्यकी बातचीत.

गुरु—क्यों लड़को ! सच तो कहो तुम्हें पतङ्ग ( कनकइया ) उड़ाना कैसा अच्छा मालूम होता है ?

शिष्य—गुरुजी महाराज ! ऐसा कौनसा लडका होगा; जिसे पतंगा उड़ाना अच्छा न लगता हो ? सबके समान हमको भी प्यारा लगता है.

गुरु—तो अच्छा यह बताओ कि, पतंग उड़ानेमें मुख्य आधार कौन चीज है ?

शिष्य—महाराज ! पतग उड़ानेमें यद्यपि अच्छा कागज और अच्छी हवाकी भी आवश्यकता है, परन्तु यह सब अच्छे होने परभी डोरीके विना कुछभी काम नहीं हो सक्ता. इसी कारण पतगमें मुख्य चीज डोरी मालूम पड़ती है.

गुरु—यदि पतंग अच्छी हवामें बहुत ऊंचा चढ़ा हो और उस समयमें डोरी टूट जाय तो फिर पतगकी क्या दशा होती है ?

शिष्य—महाराज ! जिस समय डोरी टूट जाती है उस समय पतङ्ग अपनी स्वतन्त्रताके साथ जिधर चाहे उधरको उड़ती है, परन्तु आखिरमें जमीन पर गिरके बहुधा नष्ट हो जाती है.

गुरु—बस ठीक पतंगके समानही बालकोंका स्वभाव है अर्थात् जबतक बालक अपने मातापिता व गुरुजनोंकी आज्ञारूपी डोरीमें बंधे रहते हैं तबतक उनका कल्याण और हित होता है, परन्तु जब वेही बालक अपने मातापिता व गुरुजनोंकी आज्ञा रूपी डोरी तोड़कर स्वच्छन्द हो जाते हैं अर्थात् अपनी इच्छानुसार चलते हैं और किसीकीभी आज्ञाको नहीं मानते हैं, तब वे अनेक प्रकारसे भ्रष्ट होकर बड़े २ दुःख उठाते हैं उस समय फिर बहुत पछताते हैं, परन्तु पछतानेसे कोई काम नहीं निकलता है इस कारण तुम सबको सावधान होना चाहिये. तुम अपने मातापिताओंकी आज्ञारूपी डोरीको कभी नहीं तोड़ना.

सबशिष्य—( हाथजोडकर ) अच्छा महाराज! ऐसाही करेंगे.

## पाठ २५
## नीतिके दोहा.

| | |
|---|---|
| विपिन—जंगल | बिरवा—वृक्ष |
| बांके—टेढे | सर—तालाव. |
| ग्रीषम—गर्माके दिन | शत—सौ |
| अतिथि—भिक्षुक | गेह—घर. |
| निशि—रात्रि | सूर—सूरज |
| शोर—हल्ला | शुष्क—सूखा |
| नातर—नहींतो | सजोय—जोडकरके |

अधिक सरलता सुखद नाहिं, देखो विपिन निहार ।
सीधे बिरवा कट गये, बाँके खडे हजार ॥ १ ॥
संपतिके सबही हितू, विपदामें सब दूर ।
सूखो सर पक्षी तजै, सेवहि जलतें पूर ॥ २ ॥
नहीं मान कुल रूपको, जगत मान धनवान ।
धनी देख चाडालको, लोग करें सनमान ॥ ३ ॥
संपति साथ घटै बढ़ै, सूरत बुधिबल धीर ।
ग्रीषम सर शोभा हरे, सोहै वरसत नीर ॥ ४ ॥

काम छोड शत जीमिये, न्हाइये छोड़ हजार ।
लाख छोडके दानकर, जपिये वारवार ॥ ५ ॥
सुतको जन्म विवाह फल, अतिथि दान फल गेह ।
जन्म सफल गुरुतें पठन, तजिवो राग सनेह ॥ ६ ॥
निशिमें दीपक चन्द्रमा, दिनमें दीपक सूर ।
सर्व लोक दीपक धरम, कुल दीपक सुत शूर ॥ ७ ॥
सीख दई माने नहीं, करै रैन दिन शोर ।
पूत नहीं वह भूत है, महापापफल घोर ॥ ८ ॥
शुष्क एक तरु सघन वन, जरतहिं देत जराय ।
त्योंही पुत्र पवित्र कुल, कुबुधि कलङ्क लगाय ॥ ९ ॥
सत्य दीप वाती क्षमा, शील तेल सजोय ।
निपट जतन कर धारिये, प्रतिबिम्बित जग होय १०
एक मातुके सुत भये, एक मते नहिं कोय ।
जैसे काटे बेरके, वाके सीधे होय ॥ ११ ॥
समय देखके बोलना, नातर उत्तम मौन ।
मैना शुक पकडै जगत, बगुला पकड़ै कौन ॥ १२ ॥

बुधजन

---

पाठ २६.

## उत्तम कृत्य.

किसी नगरमें एक धनिक पुरुष रहता था, उसके तीन पुत्र थे, अपनी अवस्था थोडी रही जानकर उसने अपनी सारी जायदाद तीनो लडकोंको बाट दी और एक बहुमूल्य हीरा रखकर पुत्रोंसे बोला "तुम तीनोंमेंसे जो कोई तीन महीनेके भीतर उत्तम कार्य करके दिखलावेगा उसीको यह हीरा दिया जावेगा"

तीन महीने बीतने पर बडा लड़का अपने बापके पास आया और बोला "पिताजी! एक गरीब आदमी मेरेपास कुछ माल धरोहर रख गया था और उसने मुझसे रसीद वगैरह कुछ नहीं लिखवाई थी तोभी धरोहर मागनेको आते ही मैंने उसकी धरोहर उसे सौंपदी और झूठ नही बोला, तथा धरोहर रखनेके बदले जो कुछ वह देता था, वह भी मैंने नहीं लिया; मैंने यह अत्युत्तम काम किया" बापने उत्तर दिया "इसमें तूने क्या

विशेषता की ? न्यायसे जो कुछ करना योग्य था सोंही किया"

पश्चात् दूसरा अर्थात् मझला लडका आकर बोला "पिताजी ! मैं एक तालावके किनारे चित्त प्रसन्न करनेकेलिये टहल रहाथा, इतनेमें एक बालक अचानक तालावमें गिर पडा, तालावमें पानी बहुत था तोभी मैं अपने प्राणकी परवाह न करके कूद पडा व बडी मुश्किलसे बालकको बाहिर लाया और उसके मातापिताके पास पहुचा आया, यह मैंने उत्तमोत्तम काम किया है" पिताने उत्तर दिया "इसमें भी कुछ विशेषता नहीं हुई, मनुष्यके अन्तःकरणमें दया स्वभावसे ही रहती है उसीकी प्रेरणासे तूने यह कार्य किया है अधिक कुछ नहीं"

इनके पीछे तीसरा लडका बापके पास आकर बोला—"पिताजी ! एक अंधेरी रात्रिमें मेरा एक कट्टा शत्रु बडी भारी विपत्तिमें फँसाथा अर्थात् चोरोंने उसे घेरकर सब माल असबाब छीन लियाथा और प्राण लेनाही चाहतेथे, इस बातकी खबर मुझे लगी

तो मैंने शीघ्रही पुलिसकी सहायता लकर उसे इस आपत्तिसे छुडाया और उसका सब माल असबाव भी दिलाया, यह कार्य मैंने सर्वोत्तम किया, " इसे सुनकर बाप प्रसन्न होकर बोला " बेटा ! तूने यथार्थमें उत्तम कार्य किया है. इसलिये इस हीराको तू ही ले "

## पाठ २७.
## मनुष्य.

हमारे धर्मशास्त्रोंमें मनुष्य दो प्रकारके वर्णन किये हैं एक आर्य और दूसरे म्लेच्छ आर्य मनुष्योंके रहनेका स्थान आर्यक्षेत्र और म्लेच्छोंके रहने का स्थान म्लेच्छखंड कहलाता है. संस्कृतमें आर्य शब्दका अर्थ श्रेष्ठ होताहै अर्थात जिन मनुष्योंके धर्म, कर्म, आचरणादि श्रेष्ठ हों वह आर्य मनुष्य है, और म्लेच्छ शब्दका अर्थ पामर वे नीच हैं अर्थात जिन मनुष्योंके धर्म कर्म आचरणादि निम्न-श्रेणीके होवें वे म्लेच्छ हैं. यह दो भेद मनुष्योंके यथार्थ गुणोंसे किये हैं.

आज कलकी नीतिके अनुसार मनुष्य
चारके माने गये हैं १ काकेशियन, २
३ एथलोपियन, ४ मलायन और ५
परन्तु यह भेद उनके रंगरूपकी अपेक्षासे है
माननीय नहीं हो सक्ते, क्योंकि, स्वरूपवान
महा नीच कृत्य करके नीच पदवीको पाते हैं
कुरूप अपने सदाचरणोंसे जगतपूज्य हो
फिर स्वरूपवानको उत्तम और कुरूपको नीच
कह सक्ते हैं ? इन्द्रायणका फल देखनेमें
होनेपरभी विष सरीखा कडवा होता है. और
( गन्ना ) काष्ठ होनेपरभी उत्तम स्वादिष्ट
इसलिये केवल रंग रूपसे ही मनुष्योंके भेद
मूर्खता है

आर्य मनुष्योंमें मुख्य चार वर्ण होते हैं ब्राह्मण
क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र. ब्राह्मणोंका कर्त्तव्य, क्ष
वैश्य और शूद्रोंको उपदेशदेकर धर्मके सम्मु
करना, विद्या पढ़ना और पढ़ाना. क्षत्रियोंका कर्त
सर्ववर्णोंकी अपने बल वैभव पराक्रमसे र

करना. वैश्यका कर्तव्य कृषी और व्यापारसे आजीविका करके सबको सन्तुष्ट रखना, तथा शूद्रका कर्त्तव्य उक्त तीनों वर्णोंकी सेवा करना है. उक्त वर्णव्यवस्था ऐसी उत्तम है कि, इसके अनुसार चलनेसे ससार सुखप्रद हो सक्ता है, परन्तु खेद है कि, आज कलकी नयी रोशनीवाले दूसरोंकी देखादेखी इस वर्णव्यवस्थाको तोड़कर सुखी होना चाहते हैं, परन्तु इसीसे वे अत्यन्त दुःखी होकर पश्चाताप करेंगे इसमें सन्देह नहीं है.

म्लेच्छोंमें साधारणत. जाति और वर्णभेद बिलकुल नहीं होता.

बाह्य दृष्टिसे यदि देखा जावे तो सम्पूर्ण मनुष्योंके आंख कान नाक आदि अवयव एकहीसे होते हैं, परन्तु जो अच्छे पुरुष होते हैं वे अपने शरीरसे परोपकार करते हैं, जिव्हासे सत्य भाषण करते और भक्ष्य पदार्थोंका स्वाद लेते हैं, नाक अपने अच्छे कामोंसे सदा ऊची रखते और उसीसे

रहे तो शीघ्रही जमीनमें गिरतेही उग आते हैं, जिनसे मनों धान्य पैदा होता है, ये एकता और फूटके शिक्षा लेने योग्य उदाहरण हैं

और भी पशुओंको देखो ! गाय भैंसे जंगलोंमें अपने झुंडकी किस तरह रक्षा करती हैं वे अपना व्यूह इस तरहका बांधकरके बैठती हैं कि, हरएक जंगली जानवरसे बच सक्ती हैं, यदि कोई जंगली जानवर उनमेंसे एकके ऊपर भी दावघात करता है तो वे चारों तरफसे उसके ऊपर टूट पडती हैं, परन्तु विचार करो कि, यदि वह इसतरह एक्तासे न रहें तो एक २ करके सिंहादि हिंसक जानवरोंकी शिकार बन जावें कि नहीं ?

अकेला मनुष्य कुछ भी करनेको समर्थ नहीं होता, परन्तु सैंकडों मनुष्योंसे जो सेना बनाई जाती है उससे देशकी रक्षा होती है, बडे २ योद्धा उससे भय खाते हैं इस लिये हे बालको ! तुम सदा आपसमें मिलके रहो फूटको कभी पास न आनेदो देखो ! अंग्रेज लोगोंने इस एक्तासे अपना बल,

वैभव, ज्ञान कितना बढ़ा लिया है कि, देखकर आश्चर्य होता है. यही जाति किसी जमानेमें बिलकुल जंगली थी, परन्तु आज उन्नतिके शिखर पर पहुँचके हमलोगोंकी हँसी करती है. और भारतवासी दिन पर दिन फूट पिशाचिनीके पंजेमें फँसते जाते हैं तथा एकताको भूलते जाते हैं.

पाठ २९.

## निद्रा.

दिन भरके शारीरिक और मानसिक परिश्रमोंसे इन्द्रियाँ दुर्बल और तेजहीन हो जाती हैं, उन्हें विश्राम देनेके लिये तथा भोजनकी ठीक २ पचावटके लिये निद्राकी अत्यन्त आवश्यकता है; क्योंकि दिनभरका थका मांदा चित्त हरएक कार्यकी ओर दौडनेमें अनिच्छा प्रगट करने लगता है. इन्द्रियाँ शिथिल होकर अपना २ काम करनेमें असमर्थ हो जाती हैं. भोजनकी अखीरी पचावट स्थिर शरीरमेंही हो सक्ती है, इसलिये हर एक

मनुष्यको अपनी २ इन्द्रिया फिरसे बलवान् उद्यमी करनेके लिये, चित्त प्रसन्न करनेके लिये और भोजन पचानेके लिये निद्रा अवश्यही लेना चाहिये,

परिश्रम और दु:खसे व्याकुल पुरुषका निद्रा कितना उपकार करती है और बिना निद्राके मनुष्यको कितनी हानिया पहुचती हैं, यह बतलाना वचन शक्तिसे बाहिर है, और तो क्या निद्राके न लेनेमे मनुष्यका जीना कठिन होजाता है, प्राचीन कालमें राजा लोग अपराधियोंको सोने नहीं देते थे, जिससे सैकडों अपराधी अत्यन्त कष्टके साथ अपना प्राण छोड़ देते थे, उनके लिये यही दंड दिया जाता था निद्राके न लेनेसे शरीरमें नाना प्रकारके रोग उत्पन्न होते है, जिनमेंसे मुख्य रोग अजीर्णता ( बद हजमी )का है

निद्रा रात्रिको ही लेना चाहिये क्योंकि, दिन-भर संसारमें नाना प्रकारके झगडे लगे रहते हैं, प्राय सबही लोग जीवनोपायमें लगे रहते हैं, प्राणियोंके कोलाहल बन्द नहीं होता, और इस कारण चित्त

अच्छी तरह निश्चिन्त भी नहीं हो सक्ता, और चिन्ता रहनेसे निद्रा आना बहुत कठिन होता है, इसलिये रात्रिमें ही यथार्थ विश्राम पाकर निद्रा आसक्ती है. कोई २ महाशय रात्रिभर जागरण करके दिन भर सोया करते हैं; परन्तु उन्हें ऐसा कदापि नहीं करना चाहिये, क्योंकि इससे कई तरहके नुकसान होते हैं रोगी पुरुषको निद्रा बहुत कम आती है. बदहजमीसे भी निद्रा ठीक २ नही आती, इसलिये सध्याके समय ऐसा हलका भोजन करना चाहिये, जो सरलतासे शीघ्र पचसके.

निद्राका जोर होनेपर उसे रोकना हानिकारक होता है. निद्रा न आनेका मुख्य कारण चित्तकी अनेकाग्रता है, इसलिये निद्रा आनेकेलिये जहातक बने चित्तको एकाग्र करनेका उपाय करना चाहिये. सुखदायक पुस्तकोंके पढ़नेसे, आमोद प्रमोद (हँसी खुशी) की बातचीत करनेसे, कुटम्बियोंके मीठे संभाषणसे, चित्त शीघ्र एकाग्र हो सक्ता है. सोते समय चिन्ता, क्रोध, द्वेष, वैराग्य, आदि भावोंका उदयभी उक्त बातोंसे दूर हो जाता है.

सोनेके पहिले हाथ मुंह धोकर शरीरको गाढ़े कपडेसे पोंछ कर सोना चाहिये, मुख ढंकके सोना ठीक नहीं है, क्योंकि, इससे स्वच्छ वायुके आनेमें रुकावट होकर बुरी हवा पेटमें जाती है

सोनेके स्थानमें वायु और धूप आती रहे, ऐसा बन्दोबस्त होना चाहिये, और यदि अधिक शीत न हो तो सिरानेकी खिडकीको छोड बाकी सब खिडकियाँ खुली रखकर सोना चाहिये, जिससे हवाका सचार भलीभाति होता रहे एकही कमरेमें कई मनुष्य न सोवें

शीतके दिनोंमें कमसे कम ७–८ घंटे और ग्रीष्ममें ६–७ घटे सोना चाहिये

---

पाठ ३०

## रामूका रामशास्त्री.

पहिले पूनामें पेशवाओंका राज्य था कहते है कि वहा पर एक बडे भारी सरदारके यहाँ रामू नामक एक पनिहारा था वह एक दिन सबेरेके समय

अपने मालिकके पॉवोंपर पानी डालताथा, और कोई दूसरा आदमी एक बडे २ मोतियोंकी जोडी मालिकको दिखला रहाथा. रामूकी दृष्टि मोतियोंकी तरफ चलीजानेसे पानीकी धार पॉवपर न पडकर नालीमें गिरने लगी. यह हरकत मालिकने देखली और वह रामूसे बोले "क्योंरे ! तू उस जोडीकी तरफ किस लिये देखता है ? उच्चश्रेणीकी विद्या सम्पादन करके सभाविजय करनेसे, अथवा कोई बडा भारी पराक्रम करनेसे इस जोडीको सोनेकी बालीमें डालकर कानमें पहिरनेकी योग्यता होती है ! वह योग्यता तुझ पनिहारेमें कहासे हो ?

यह वाक्य रामूके अन्तःकरणमें तीक्ष्ण बाण सरीखा लगा, और लगतेही वह वहासे निकल पडा और काशी जाकर एक बडे भारी पंडितके पास विद्याभ्यास करने लगा, और वहापर उत्तम आस्थासे उसने इतना अभ्यास किया कि, सपूर्ण लोग उसको **रामशास्त्री** कहने लगे, और उसका पूर्ण सन्मान करने लगे. पश्चात् **रामशास्त्रीजी** पूनामें आये

और वहां वह मुख्य न्यायाधीशके पदपर नियत किये गये, न्यायाधीशका कार्य उन्होंने अत्यन्त निष्पक्षपात तथा निस्पृहतासे चलाया, यहांतक कि वह अपने निर्वाहके लिये केवल अन्न वस्त्रमात्र सरकारसे लेतेथे तनख्वाह कुछभी नहीं।

पेशवाओंका राज्य नष्ट होनेपर रामशास्त्री न्यायाधीशका पद छोड़कर किसी छोटेसे ग्राममें जाके रहे और वहांपर उन्होंने अपना शरीर त्याग किया

प्रत्येक विद्यार्थीको चाहिये कि विद्याभ्यासमें इतना परिश्रम करे जिससे समूमे रामशास्त्री होनेका प्रसङ्ग प्राप्त हो देखो! एक पनिहारेने कितनी योग्यता प्राप्त करके कैसी प्रतिष्ठा पाई

पाठ ३२

## नीतिसंग्रह.

---

| | |
|---|---|
| व्याधि-रोग | उपाधि-झगडे |
| सुरा-शराब | कल्याणी-शान्तिके देनेवाला |
| सुघर-बुद्धिवान् | पानि-हाथमें |

| | |
|---|---|
| सुधी–चतुर. | अरथ–धन |
| सर–तालाब | त्रष–प्यास. |
| सडर–भयसहित. | भुजङ्ग–सर्प |
| निशि–रात्रि. | कौल–सौगंध. |
| परभंग–दुर्गमगम | उद्योत–प्रकाश |

संगति कीजे साधुकी, हरै औरकी व्याधि ।
ओछी संगति नीचकी, आठों प्रहर उपाधि ॥ १ ॥
जिहि प्रसङ्ग दूषण लगै, तजिये ताको साथ ।
मदिरा मानतहै जगत, दूध कलाली हाथ ॥ २ ॥
जाके संग दूषण दुरै, करिये तिहि पहिचानि ।
जैसे समझें दूध सब, सुरा अहीरी पानि ॥ ३ ॥
नाहीं धन भूषण वसन, पंडित यद्यपि कुरूप ।
सुघर सभामें दिपत यों, ज्यों जग राजत भूप ॥ ४ ॥
जो कुदेवको पूजिके, चाहै शुभको मेल ।
सो बालूको पेलिके, काढ्यो चाहै तेल ॥ ५ ॥
प्रथम धरम पीछे अरथ, बहुरि कामको सेय ।
अन्त मोक्ष साधै सुधी, सो अविचल सुख लेय ॥६॥
नीतवान नीत न तजें, सहै भूख त्रष त्रास ।
ज्यों हंसा मुक्ता बिना, बन सर करें निवास ॥७॥

शठ सज्जनताको लहैं सत्सगतिको पाय ।
ज्यों चन्दनके योग है, नीम सुगंधित जाय ॥ ८ ॥
सुजन कुसगति पायके, सज्जनता न तजन्त ।
ज्यों भुजगगण संगते, चन्दन विष न धरंत ॥ ९ ॥
जाके चित आतुर अधिर, सदर शिथिल मुखपोल।
ताको भाख्यो सॉच नहिं, भुठहि करि है बोल ॥१०॥
सुख बीते दुख होत है, दुख बीते सुख होत ।
दिवस गये ज्यों निशि उदित,निशि गत दिवस उद्योत
प्रथम कियो सो अब लह्यो, भोग रोग उपभोग ।
अब करनी ऐसी करो, है परभवके जोग ॥ १२॥

पाठ ३२

## बालिकाकी दया

एक धनवान पुरुष किसी शहरको व्यापारके लिये जा रहा, मार्गमें उसको चोरोंने लूटकर ऐसा मारा कि, उसका सारा शरीर जर्जर हो गया जैसे तैसे अपने प्राण बचाकर वह एक शहरके समीप झाडकेनीचे आकर पड़ गया और अशक्तताके कारण वहॉसे आगे न जासका अनायास एक ग-

रीब ब्राह्मणकी लडकी जिसका नाम सुशीला था, वहासे निकली. उसे इस आदमीकी ऐसी दुरवस्था देखकर बडी करुणा आई, और उसे भूखा जानके बाजारसे दो पैसेके चने लाकर दिये वह आदमी क्षुधासे अत्यन्त व्याकुल था, इसलिये उसे चनोंका मिलना प्राणरूप हो गया सुशीलाने फिर उसे पानी वगैरह पिलाया, दूसरे दिनभी उस बालिकाने ऐसाही किया, मनुष्यकी अवस्था इससे सुधरने लगी, और इसी तरह सुशीला नित्य उसे दो पैसेके चने दे आने लगी.

एक दिन दुःखी पुरुषने कहा, मैंने सुनाहै कि तुम्हारे माता पिता बहुत गरीब हैं, फिर तुम यह पैसा कहासे लायाकरतीहो ? मुझे भूखसे प्राण त्याग देना स्वीकार है, परन्तु किसी गरीब आदमीकी कौडी लेना स्वीकार नहीं. सुशीलाने उत्तर दिया. मैं रोज जंगलमें जाकर लकड़ी बीन लाया करती हू और उन्हें बेचकर तुम्हें बाजारसे चना लाती हू. प्राणीमात्रको दुःखी देखकर उनकी दयापूर्वक स-

हायता करना मनुष्यका परम कर्त्तव्य है, और यह बात मेरे मातापिता भी जानते हैं. आप कुछ खेद न करें

इस करुणामयी वचनोंको सुनकर दुःखी पुरुषका कंठ गद्गद हो गया वह अश्रुपूर्ण नेत्रोंसे बालिकाके मुखकी ओर देखता हुआ बोला, हे विधाता! तू ऐसी दयामूर्तियोंका कल्याण क्यों नहीं करता? यह पृथिवी इन्हींके पुण्योदयसे फलवती होती है

कुछ दिनोंके पीछे इस धनिक पुरुषको ढूंटते २ उसके कुटुम्बीजन इसी गावमें आ निकले, और इसे पाकर बहुत सुखी हुए. धनी पुरुषने सुशीलाकी दयाका वृत्तान्त सब लोगोंको कह सुनाया, जिसे सुनकर सब लोग 'धन्य धन्य' कहने लगे धनिक पुरुषने सुशीलाके मातापिताओंको बुलाकर उनकी बहुत सुश्रूषा की, और उन्हें खूब धनसे परिपूर्ण करके सुशीलाको सहस्रों धन्यवाद देता हुआ अपने देशको गया.

पाठ ३२.

## मांस.

क्षुधा ( भूख ) को दूर करनेके लिये भोजनकी आवश्यकता होती है, और उस भोजनके लिये एकसे एक उत्तम बलकारी अन्न दुग्ध घृतादिक सैकडों स्वादिष्ट पदार्थ संसारमें मौजूद हैं; परन्तु इनके रहते भी कोई २ अविचारी मास मछली आदिक अभक्ष्य पदार्थोंको खाते हैं. मनुष्य और पशुओंमें केवल इतनाही अन्तर है कि, वे अपने हिताहितको विचार करके भक्ष्य अभक्ष्यके भेदसे भोजन करें इसलिये जो लोग भक्ष्य पदार्थोंके मिलते हुए अभक्ष्य पदार्थोंको खाते हैं वे साक्षात पशु हैं.

मास एक महा अपवित्र और अभक्ष्य पदार्थ है यह चिंटी मकोडी आदि छोटे २ जीवोंकी हत्या करनेसे नहीं मिलता, किन्तु वकरी, गाय, बैल, मत्स्य ( मछली ), सूअर आदि पंचेन्द्रिय जङ्गम ( वडे ) जीवोंके मारनेसे मिलता है. विचारे निरपराधी जीवोंको खूंटेसे बांधकर या लटका कर छुरीसे

घड़ी निर्दयताके साथ मारके जब उनका जीवन-सुख नष्ट किया जाता है तबही मास मिलता है, अन्यथा नहीं.

हे बालको ! जब कभी तुम्हारे पाँवोंमें कांटा लग जाता है तब तुमको कितना कष्ट होता है ? तुम्हारे शरीरमें भूलसे जब चाकू या छुरीका जरासा घाव लग जाता है तब तुमको कितनी तकलीफ होती है ? दूसरे तुमतो उस दु:खको वचनोंके द्वारा अपने मातापिताओंसे कह भी सकेहो, परन्तु जिन गरीब जीवोंके वाणी नहीं है, जिनका कोई सहायक नहीं है, भला सोचो तो ! गलेपर छुरी फेरनेमें उनके दु:खका क्या ठिकाना रहता होगा ? उनके सहायक और मालिक जब तुमही हो, और तुमही अपनी लम्पटतासे क्षणभरके स्वादके लिये उसे इतना कष्ट देते हो, तब वह बिचारे किसकी शरण लेवें

यद्यपि मास पौष्टिक है, परन्तु जब उससे अठगुणे पौष्टिक घी दूध मौजूद हैं, तो ऐसे घृणित

पदार्थको क्यों खाना ? जिसके समान अपवित्र वस्तु दूसरी नहीं है जिसके ऊपर हजारों मक्खिया उडा करती हैं और जिसे देखनेसे घृणा होती है इस अभक्ष्य पदार्थके खानेसे बुद्धि मलीन और निर्दय हो जाती है, सैकडों रोगोंकी उत्पत्ति होती है, इसके सिवाय अनन्त जीवोंके मारनेका महा पाप लगता है, क्योंकि मासके एक २ कणमें हजारों जीव होते हैं जो प्राणीके मरनेके साथ ही उत्पन्न हो जाते हैं

कोई २ लोग मास खाना शास्त्रविहित बतलाते हैं किन्तु यह उनकी कुटिलताभरी बडी भारी भूल है जिस ग्रन्थमें इसके खानेकी विधि है वह कदापि शास्त्र नहीं कहला सक्ता पापी पाखंडी लोग अपनी लोलुपतावश जिन शास्त्रोंमें मास खाना सर्वथा नहीं है उनमेंभी कुछका कुछ अर्थ लगाकर बतला देते हैं, परन्तु वह अर्थ माननीय नहीं होसक्ता आर्य संतान मांसाहारिणी कभी नहीं थी और प्राय अवभी कम देखी जाती है जो कुछ है वह यहापर म्लेच्छ

च्छोंका राज्य होने तथा अनेक कुधर्मोंका प्रचार होनेसे होगई है आजकलभी अंगरेजी विद्याका प्रचार होनेसे कोई २ पढे लिखे महाशयोंमें प्रगट तथा तो नहीं, किन्तु छिप २ के मांस खानेका प्रचार बढ़ने लगाहै, क्योंकि, ये लोग धर्मसे बहुत दूर रहते हैं. इन अधर्मियोंकी देखादेखी विचारवानोंको निर्दयी व हिंसक कदापि न बनना चाहिये संसारमें कोई भी धर्म ऐसा नहीं है जिसमें कि हिंसा करनेको धर्म माना हो

कईएक महाशय कहने लगते हैं कि, "तुम मांस खानेवालोंको हिंसक क्यों कहते हो? क्योंकि, वे खुद तो किसी जानवरको मारतेही नहीं है, धीमर कसाई वगैरह नीच लोग हिंसा करते है" उन महाशयोंको सोचना चाहिये कि, यदि सबके सब मांसाहारी लोग मांस खाना छोड़ देवें तो धीमर कसाई जीवोंको किसलिये मारें? और मांस किनको बेचें? परन्तु जब लोग मांस खाते हैं और पैसा देकर मोल लेते हैं तो उनकी तरफसे यह

हुक्म स्वयही हो जाता है कि "तुम जीवोंको मारकर हमारे लिये मास मछली तयार रक्खा करो और हम हर रोज तुम्हारे यहासे मास मछली लिया करेंगे" अब बताइये कि, मामाहारी लोग हिंसक क्यों नहीं हुए? क्योंकि वर्तमान सरकार भी तो खून करनेवाले और खून कनेवालेको आज्ञा देनेवाले दोनोंको फॉसीका हुक्म देती है, इस लिये मासादि अभक्ष्य पदार्थोंका दूरहीसे परित्याग करना मनुष्यमात्रका कर्त्तव्य है.

पाठ ३४.

## पुरुपार्थ.

जीवनयात्रामें मनुष्यका प्रयोजनभूत ( मतलबका ) पदार्थ पुरुपार्थ है इसके बुद्धिवानोंने धर्म अर्थ काम और मोक्ष ऐसे चार भेद किये है. जो पुरुप इन चारोंका यथोचित रीतिसे साधन नहीं करता, वह न सुखी हो सक्ता है, 'न प्रशसाके योग्य हो सक्ता है और न परलोकही सुधार सक्ता है. इनके साधन करनेका यह क्रम है, कि धर्म

करके अर्थ ( धन ) को सचय करै और फिर अर्थको पाकर काम भोग करै, परन्तु ध्यान रहै कि, काम भोग करनेभी धर्म और धनका स चय करना न छोड देवै, क्योंकि यदि इनको भूल जावेगा तो फिर कामभोग जो धन और धर्मसे होता है, कैसे हो सकेगा ? काम भोगमे सतोप पाकर फिर मोक्षकी ओर प्रवृत्ति करे, अर्थात् मोक्ष पानेके जो २ उपाय हैं, उनके करनेमें दत्तचित्त (लवलीन)होवे यदि इन चारों पुरुषार्थोंके साधनेका क्रम ऐसा नहीं रक्खाजावेगा तो बहुत अनर्थ होजानेकी सभावना है कोई पुरुष यदि केवल धर्म साधनही करै तो वह अर्थ और काम बिलकुल नहीं करसकेगा बल्कि, धर्म भी नहीं करसकेगा, कारण धर्मभी अर्थ (धन)के बिना नहीं हो सक्ता इसी प्रकार यदि कोई केवल धनही जोड़ता रहै, तो वह धर्म काम मोक्षके बिना दुखी रहैगा तथा कालान्तरमें धर्म काम हीन भी हो जावेगा क्योंकि धनकी प्राप्ति धर्मसे होती है, परन्तु जब धर्मही क्षीण हो गया तो कहासे हो ?

ऐसेही कोई केवल काम साधन करै तो एक तो वह अनाचारी कहलाकर धर्म अर्थ और मोक्षके विमुख रहैगा, दूसरे थोडे ही दिनोंमें धर्म और अर्थकी क्षीणतासे काम सेवनमें भी असमर्थ हो जावेगा; क्योंकि बिनाधन और पुण्यके कामसाधना भी नही हो सक्ती, इसलिये इन तीनोंका क्रमशः पालन करनाही श्रेय है

बहुतसे लोग कहा करते हैं कि विना भाग्यके कुछ भी प्राप्त नहीं होता और ऐसा एकान्त (इकतरफी ) पक्ष लेकर उसी भाग्यके भरोसे बैठे रहते हैं, तथा पुरुषार्थ कुछ भी नही करते, सो यह उनकी बडी भारी भूल है देखो यदि तुममेंसे कोई विद्यार्थी यह विचार लेवे कि, कलका सबक ( पाठ ) भाग्यमें लिखा होगा तो याद हो जावेगा और उसे याद बिलकुल न करै तो क्या उसे पाठ याद हो सक्ता है ? कदापि नहीं, परन्तु यदि पुरुषार्थ करके याद करैगा तो याद हो ही जावेगा, इस लिये पुरुषार्थ करना कभी न छोडना चाहिये, हा ! हम

मानते हैं कि भाग्य भी एक चीज है, परन्तु उद्योग न करके उसकोही दोष देना बडी भारी भूल है उसका दोष तो तब यथार्थ हो सक्ता है जब पुरुषार्थ करने पर भी कार्यकी सिद्धि नहीं होती, परन्तु तब भी जानना चाहिये कि, कोई न कोई हमारे पुरुषार्थमेंही त्रुटि होगी

---

पाठ ३७.

## व्यायाम ( कसरत. )

यदि तुम एक बढई तथा लुहारके दाहिने हाथको जिससे वह निरन्तर हथौडा पीटा करता है- एक नक्खी बाबाके हाथसे जो नख बढाये सर्वदा हाथको ऊपर उठाये रहता है, मिलाओगे तो तुम्हे मालूम हो जावेगा कि, लुहारका हाथ बाये हाथकी अपेक्षा अधिक पुष्ट और बलवान है और नक्खी बाबाका हाथ जो सूखकर लकडी सा होगया है बिलकुल कमजोर है इसका कारण यदि तुम विचारोगे तो ज्ञात हो जावेगा कि, बढई तो अपने

हाथमे सदा परिश्रम किया करता है और नक्खी बाबा अपने हाथसे कुछभी परिश्रम नहीं लेते, इससे जाना जाता है कि, शरीरके प्रत्येक अग यथायोग्य कार्य लेनेसे पुष्ट और बलवान रहते हैं तथा कार्य न लेनेसे निर्बल और बेकाम हो जाते हैं, इसलिये उनसे परिश्रम लेना अत्यावश्यक है.

परिश्रम करनाही एक प्रकारकी कसरत है. खेलना, कूदना, दौडना, बैठना, उठना, दंड खींचना, युद्ध विद्या सीखना, यह सब कसरत हीके भेद हैं.

कसरत करनेसे श्वास जल्दी २ चलती है और इस कारण शरीरमें हवाका प्रवेश अधिक होताहै और हवाके आवागमनसे रक्तशोधन क्रिया होतीहै, जो आरोग्यताका मूल कारण है. दूसरे कसरत करनेसे पसीना अधिक आता है, जिसके द्वारा शरीरमें के दूषित पदार्थोंका निसरण ( निकलना ) होता है और यही कारण है कि, कसरतके पीछे पसीना निकलजानेसे शरीर हलका, सतेज और चित्त प्रसन्न हो जाता है. कसरत करनेसे बदनमें फुर्ती

चाञ्चल्य ( चचलता ) आकर सदा आरोग्यता रहती है बहुधा देखा गया है कि, कसरत करनेसे मोटे तथा भद्दे पुरुष और बिलकुल दुबले पुरुष अपने मोटेपन और दुबलेपनको छोडकर सुडौल और सबल होजाते हैं. कसरत करनेसे भूख लगती है,पाचनशक्ति बढ़तीहै, और उत्साहकी वृद्धि होतीहै

विद्यार्थियोंको तथा उन पुरुषोंको जो शारीरिक परिश्रम बिलकुल नहीं करते कसरत बहुत लाभकारी होतीहै प्राय सबही देशोंमें छोटे बड़े लडके खेला करते हैं खेलनेवाले लडकोंका शरीर बहुत स्वस्थ रहताहै, क्योंकि, दौडादौडी करनेसे अथवा अन्य प्रकारके खेलोंमें बलप्रकाश करनेसे हाथ पाव वगैरह सब अग बलिष्ठ हो जाते हैं बल्कि उच्चस्वरमे हँसने व बोलनेसे भी बालकोंकी नीरोगता बढती है

जो विद्यार्थी दिनरात पढ़ाही करते हैं और कसरत बिलकुल नहीं करते हैं, वे परीक्षाके समय बीमार पड जानेसे फेल हो जाते हैं और जो कहीं

पास भी हो जावें तो फिर उनसे शारीरिक परिश्रम-वाले काम होना कठिन हो जाते हैं सो ऐसा कदापि नहीं होना चाहिये, क्योंकि, मस्तिष्क (मगज) मनका एक यन्त्र है, इसमें व्यायाम करनेसे बलका समागम होता है इसे कभी निर्बल न होने दना चाहिये परिमित ( जितना चाहिये उतना ) पढ़कर यथोचित कसरत करना चाहिये, क्योंकि, जो विद्यार्थी कवल कसरत करते और खेलते कूदत रहते हैं वे निरेमूर्ख रह जाते हैं

भूखके समय तथा खालीपेटमें व्यायाम कभी न करना चाहिये, कसरत करके शीघ्रही स्नान करना तथा हवा खाना हानिकारक है

पाठ ३६

## ठीक समय पर काम करना.

सूर्य चन्द्रमा और तारे यह ठीक समय पर ऊगते और डूबने हैं समुद्रका ज्वारभाटा भी ठीक समयपर आता है. इनके योगसे मनुष्योंको अपना

उद्योग करनेमें बहुत सुभीता पडता है, रेल गाड़ी, अग्निबोट, डाक ठीक समयपर जाती और आती है, इनके योगसेभी मनुष्योंको अपने २ कामकी व्यवस्था करनेमें बहुत सुभीता पडता है इसी प्रकार मनुष्योंको अपना २ काम ठीक समयपर करनेसे उन्हें स्वत तथा इतर मनुष्योंको अत्यन्त सुख होता है, इसलिये बुद्धिवान् पुरुष अपने काम नियत समयपरही करते हैं

जार्ज वाशिंग्टन अपने सम्पूर्ण कार्य नियमसे ठीक नियत वक्तपर करते थे, उनके कामोंमें एक पलभरका भी अन्तर नहीं होताथा, यहातक कि लोग उनके जाने आनेपर अपनी घडिया मिलाते थे

वे रोज सन्ध्याके चार बजे भोजन करतेथे, और उस समय भोजनोंको बुलाये हुए लोग यदि नहीं आते तो वे उनके लिये एक पलभरभी मार्ग नहीं देखते, और जीमनेको बैठ जाते, पीछे यदि कोई आता तो कहते कि, महाशय ! मैं अपने सम्पूर्ण कार्य नियत समयपर करता हू

उनका एक मुहर्रिर कचहरीमें हमेशा देरसे आया करता था, देरीका कारण पूछनेपर कह दिया करता था, कि, मेरी घड़ी ठीक टाईम नहीं देती. उससे वाशिंगटनने स्पष्ट कह दिया कि, " सुनो ! या तो तुमको दूसरी घडी लाना चाहिये, अथवा हमको दूसरा मुहर्रिर मुकर्रर करना चाहिये, इनदो उपयोंको छोड़के तीसरा उपाय नहीं है.

रावसाहिब विश्वनाथ नारायण मडलीक भी ऐसेही समयके पाबिन्दा थे, उनके नियमित समयों परभी लोग आश्चर्य किया करतेथे. एक समय एक यूरोपियन महाशयने उनसे पूछा कि, आपकी इतनी वय हो जानेपरभी आपसे इतने कार्य किस प्रकार होते हैं? और आपका शरीर व स्वास्थ्य हमेशा ठीक किस प्रकार रहता है? रावसाहिबने इसपर उत्तर दिया कि, मैं अपने सम्पूर्ण कार्य ठीक २ समयपर करता हूं, और उसीका यह फल है.

अपना काम नियत समयपर करना यह कुछ कठिन नहीं है. आदत पड़ जानेसे फिर कभी चूक

नहीं होती इस आदतसे अनेक लाभ होते हैं; इस लिये विद्यार्थियोंको तो अपना पाठ याद करने व पाठशालामें आनेजानेके लिये यह आदत अवश्यहि डालना चाहिये, इसके कारण समय व्यर्थ जानेका भय नहीं रहता

---

पाठ ३७

## सुभाषित दोहा



| | |
|---|---|
| सुभाय–प्रकृति | कोठरे–अन्न रखनेकी जगह |
| बान–आदत | पय–पानी |
| अभलौ–बुराई | पय–दूध |
| फणी–सर्प | अनसरने–काम न चलनेपर |
| वहमी–सन्देही | सयान–चातुर्य |
| मधुर–मीठा | अजस–अपकीर्ति |

थोडेमें फल देत बहु, उत्तमपुरुष सुभाय।
दूध झरै तृण को चरै, ज्यों गोकुलकी गाय॥ १॥
जेताका तेता करै, मध्यमनर सनमान।
घटत बढत नहिं रचहू, धरहु कोठरे धान ॥ २॥
दीजे जेता नहीं मिलै, नीच पुरुषकी बान।
जैसे फूटे घट भरयो, मिलै अल्पपय थान ॥ ३॥

भलो करत अभलौ करै, दुर्जन सहज स्वभाय ।
पय प्याये विष देत ज्यों, फणी महादुखदाय ॥ ४ ॥
झूठी मीठी तनिकसी, अधिकी मानें कौन ? ।
अनसरते वोले इती, ज्यों आटेमें नौन ॥ ५ ॥
अवसर लखके बोलिये, यथायोग्य शुभवैन ।
सावन भादों वरसतें, सबही पावत चैन ॥ ६ ॥
बोल उठै अवसर विना, ताको रहै न मान ।
जैसे कातिक वरसते, निन्दा है सब थान ॥ ७ ॥
उद्यम साहस धीरता, पराक्रमी मतिमान ।
येते गुण जा पुरुषमें, सो निर्भय बलवान ॥ ८ ॥
रोगी भोगी आलसी, बहमी हठी अज्ञान ।
ये गुण दारिद्यानके, सदा रहित सब थान ॥ ९ ॥
अति खाये तें रोग है, अति बोले अपमान ।
अति सोये धन हानि है, अति मत करहु सयान१०
आवत उठ आदर करहु, बोलहु मीठे बैन ।
हिल मिल बैठहु जासुतें, जिय पावहि अति चैन११
भला बुरा लखिये नहीं, आये अपने द्वार ।
मधुर बोल यश लीजिये, नहिं तो अयश तयार॥१२॥

बुधजन.

पाठ ३८

# मोरके पंख लगानेवाला कौआ.

एक दिन एक कौएको ऐसी अभिलाषा हुई कि यदि मैं मोर बन जाऊं तो मेरी बड़ी प्रतिष्ठा हो; उसने अनेक प्रयत्न करके मोरोंके पंखे इकट्ठे किये और उन्हें अपने अङ्ग पर बड़े शौकसे लगालिये पंखे लगाकर जब उसने अपने रूपको देखा तो दिलमें अभिमान कर बोला, कि अब मुझमें और मोरमें अन्तर ही क्या है ? ऐसा विचारकर वह मोरोंके समाजमें जाकर मिलगया, परन्तु सबके सब मोर उसे आते ही पहिचानगये, और उन्होंने क्रोधित होकर चोंचोंसे मार २ कर उसे अपने समाजसे बाहिर कर दिया, तब लाचार होके पंखे वगैरह निकालकर कौआ अपनी काकाली ( कौओंके समूह ) में गया. परन्तु वे सब कौए इसकी चालबाजी जान गयेथे, इस कारण वे भी अपमान दृष्टिसे देखकर इसे दुखी करनेका उद्योग करने लगे उसकी ऐसी दशा देखकर एक वृद्ध कौएने कहा कि " भाई !

तुझे जब विधाताने कौआ बनायाहै तब तू शरीरमें पख खोंसकर मोर क्यों बनना चाहता है? ऐसा मूर्खतापूर्ण प्रयत्न करकेही तूने अपनी फजीहत की है."

तात्पर्य—कर्मकृत ( भाग्यंस ) जो स्थिति प्राप्त हुई है, उसे बुरा समझके केवल बाह्य आडम्बरसे अच्छी पानेका उद्योग करना यह बडी विपत्तिका कारण है समझदार मनुष्य अपनी स्थितिमेंही संतोष करतेहैं आजकल बहुधा देखने में आता है कि, लोग थोडी सी अंग्रेजी पढ़कर अपने कुल व जातिके धर्म, कर्म, आचरणादि बुरे समझके अंग्रज होनेका प्रयत्न करतेहैं. वे अग्रजों सरीखा बल, विद्या, बुद्धि, पानेका परिश्रम न कर उनके बाह्य आडम्बरोंकी नकल करते हैं, वे कोट बूट पटलून पहिनते हे, सिरपर टोप रखते हैं मुहमें एक चुरुट दबाते हैं, सो ऐसा करना बडी भारी मूर्खता है और जो कोई यह समझ कर कि, हमारा अंग्रेजोंमें आदर होगा, ऐसा करते हैं. उनकी

भी भूल है, क्योंकि अंग्रेज लोग ऐसे जातिधर्म-पतित लोगोंको औरभी घृणाकी दृष्टिसे देखते हैं अबभी राजदरबारोंमें यदि कोई देशी धनाढ्य विलायती पोशाकमें जावे तो उसका कुछ भी सत्कार नहीं होता. इस लिये हे बालको! तुम सब अपने २ धर्म कर्म आचरणोंको दृढ रखकर अंग्रेजोंके उत्तम २ गुण सीखो, परंतु उनके मद्यपानादिक अवगुण कभी न सीखो.

पाठ ३९

## भूगोल



सम्पूर्ण आर्य ग्रन्थकारों तथा विद्वानोंने पृथिवीको स्थिर और झालरके समान चपटी मानी है सूर्य चन्द्र ग्रह नक्षत्रादिकोंको चल अर्थात् सुमेरु पर्वतकी प्रदक्षिणा करते हुए मानाहै, और इसी प्रदक्षिणाके आधार पर उन्होंने ज्योतिषके बडे २ ग्रंथ बनाये हैं, जिनको पढ़कर ज्योतिषी विद्वान् ग्रहनक्षत्रादिकोंके स्थान तथा सूर्यग्रहण चन्द्रग्रहण आदि विषय गणित लगा कर पहिलेहीसे बता देते हैं और तो क्या?

वे इसी विद्यासे मनुष्यकी आयु सुख, दुख, लाभ, हानि आदि स्पष्ट बता सक्ते हैं, परन्तु आज कलके यूरोपियन विद्वान् पृथिवीको नारंगीके समान गोल चल और सूर्यको स्थिर बतलाते हैं और इसके अनुसार ज्योतिषियोंके समान यह भी भविष्यद्वाणी कह सक्ते है, और पृथ्वीकी गतिमें बहुतसे प्रमाण भी देते हैं, परन्तु अभीतक पृथिवीके चलनेमें सर्व विद्वानोंका मत स्थिर नहीं हुआ है और तो क्या यूरोपके प्रसिद्ध विद्वान् मि पेरेलेक्ष आदिने ही 'अर्थनाटएग्लोब,' अर्थनाटप्लेनेट, आदि ग्रन्थ बना कर इस मतका खूब खडन करके पृथ्वीको अच्छी तरहसे थाली व झालरके समान गोल सिद्ध कर दिखाया है इसके सिवाय सन १८९८ ई० में जो सूर्यग्रहण खग्रास पडा था उसका समय ठीक २ न बता सकनेसे सैकडों यूरोपीय विद्वानोंके मत पलट गये हैं

यद्यपि भूगोलकी स्थिरता अस्थिरता तथा नारंगीके व झालरके समान उसकी गुलाई अभीतक वादग्रस्तही है, परन्तु वर्तमानमें जो पृथिवीके दे-

शादिक बतलानेका नक्शा प्रचलित है तथा उसमें जो सीमादिक बांधी हैं वे प्राय: सर्वसम्मत होनेसे हरएक आदमीके जानने योग्य हैं

पृथिवीके दो हिस्से हैं एक **पूर्वी गोलार्ध** जिसको पुरानी दुनिया कहते हैं और दूसरा **पश्चिमी गोलार्ध** जिसको नई दुनिया कहते हैं. पुरानी दुनियामें **एशिया, यूरोप, आफ्रिका** और **आष्ट्रेलिया** यह चार महाद्वीप हैं, जिनको हिन्दमहासागर, अटलांटिक, भूमध्य, उत्तरध्रुव दक्षिणध्रुव और पासिफिक महासागर चारों तरफसे घेरे हुए हैं नई दुनियामें **उत्तर अमेरिका** और **दक्षिण अमेरिका** यह दो महाद्वीप हैं जिनके चारों तरफ पासिफिक, अटलांटिक उत्तरध्रुव, दक्षिणध्रुव यह समुद्र पडे हुए हैं इनका विशेष वर्णन तुम्हें आगे पढाया जावेगा

पाठ ४०

## ज्ञान.

जगतमें जितने जीव हैं वे सब सुखकी इच्छा करते तथा दुखसे भयभीत रहते हैं और इच्छित

सामग्रीका प्राप्त होना अथवा उस इच्छाका नष्ट होजाना सुख कहलाता है जैसे किसी पुरुष की भोजन करनेकी इच्छा थी और उसे उसी समय भोजन प्राप्त हो गया इससे वह सन्तुष्ट होकर सुखी हो गया, अतएव जाना जाता है कि, इच्छाका पूर्ण होना ही सुख है.

अब सोचना चाहिये कि, संसारके सब प्राणी सुखी क्यों नही हैं? इसका कारण यही है कि वे सब इच्छा पूर्ण करनेके उपाय नहीं जानते और वे उपाय विना ज्ञानके किये नहीं हो सक्ते, अर्थात् सुख होनेका मुख्य कारण ज्ञान है. विना ज्ञानके सुख नहीं हैं.

ज्ञान आठ प्रकारके होते हैं एक तो **मतिज्ञान** जो स्वभावसेही उत्पन्न होता है, दूसरा **शास्त्रज्ञान** जो शास्त्रोंके पढ़नेसे होता है, तीसरा **अवधिज्ञान** जिससे दूसरे स्थानोंकी चीजोंको विना देखे सुने जान सक्ते हैं, यह ज्ञान बहुधा देवोंमें तथा ऋषि मुनियोंमें पाया जाता है चौथा वह ज्ञान जिससे दूसरेके मनकी बात विना किसी निमित्तके जान

ली जाती है, मन-पर्ययज्ञान कहलाता है. यहभी ऋषि मुनियोंमें ही होता है. पाचवाँ वह ज्ञान जिस से संसार भरकी चराचर वस्तुएँ हाथकी रेखाके स-मान दीखती हैं इसको केवलज्ञान कहलाता है, यह केवल सर्वज्ञ परमेश्वरको होता है

अब यहापर एकबात और भी विचारणीय है कि, कितनेक पुरुष जिस विषय की इच्छा करते हैं वह प्राप्त होने परभी सुखी नहीं हो सक्के, इसका कारण यदि किसी विद्वानसे पूछोगे तो वह यही कहैगा कि, उसका वह ज्ञान यथार्थ नहीं है जिससे उपाय करके उसने अपना विषय चाहा है. अज्ञानी जीव दुनियाके पदार्थोंका स्वरूप औरका और जानता तथा श्रद्धा न करता है. और फिर वैसाही आचरण करता है, इसी कारण इस मिथ्याज्ञान मिथ्याश्रद्धान और मिथ्याचारित्र ( आवरण ) से जीवोंकी इच्छा भले प्रकार नष्ट नहीं होती, जैसे कोई मूर्ख जिसने कभी मिश्री व सखिया ( विष ) न देखा हो वह सखियेकी डलीको अपने आप व

किसी दूसरेके कहनेसे मिश्री जानकर खालेवे तो सुखी होनेके बदले अत्यन्त दुखी हो जाता है,अब विचार करो कि, उसने संखिया खानेका उपाय तो किया सुखके लिये और होगया उससे उलटा दुख इसका कारण यही है कि, वह ज्ञानहीन मूर्ख था, जो संखियाको मिश्री समझ खागया इसी प्रकार जगतके समस्त जीव सम्यकज्ञान ( यथार्थ ज्ञान ) के न होनेसे वस्तुका स्वरूप ठीक २ नहीं जानते किन्तु औरका और जानकर और ही श्रद्धासे आचरण करते हैं अर्थात् देवको कुदेव,कुदेवको सुदेव, सद्गुरुको कुगुरु, कुगुरुको सद्गुरु, शास्त्रको कुशास्त्र, कुशास्त्रको शास्त्र, धर्मको कुधर्म,कुधर्मको सुधर्म, सत्यवक्ताको झूठा, झूठेको सत्यवक्ता, सुमित्रको कुमित्र, कुमित्रको सुमित्र, विश्वासीको दगाबाज,दगाबाजको विश्वासी, अच्छे व्यापारको बुरा व्यापार, बुरे व्यापारको अच्छा व्यापार, झूठ बोले विना व्यापार नहीं चलता, सच बोलनेसे व्यापार नष्ट होता है, ऐसा समझ२कर उसीके अनुसार चलते हैं तो उनके

इच्छित फलकी प्राप्ति नहीं होती, और इसीसे बहुधा जीव सुखी नहीं होते, इस लिये सबको उत्तम ज्ञान लाभ करनेकी अतिशय आवश्यकता है और आजकल यह ज्ञान प्राचीन संस्कृत शास्त्रोंके पढ़नेसे मिल सक्ता है, इस लिये सबको शास्त्राभ्यास करनेमें तत्पर होना चाहिये, परन्तु ज्ञान केवल इसीको नहीं कहते हैं कि, दश पांच अंग्रजीकी पुस्तकें पढ़कर परीक्षा पास करके इंग्लिश बोलने लगे, किंतु उत्तम ज्ञान उसीको कहते हैं कि जिसके प्रभावसे हिताहितका विचार होवे. अर्थात् अमुक काम करनेमे अपना व दूसरेका हित होगा और अमुकके करनेमे अहित. इसलिये हे बालको! तुम्हें सदा ज्ञान प्राप्तिके उपायोंमें दत्तचित्त रहना चाहिये यदि तुम सुख चाहते हो तो सब झगडोंको छोडकर समीचीन ज्ञानवान हो जाओ, जिससे पदार्थोंका स्वरूप भले प्रकार जानकर उसके अनुसार आचरण करसको, क्योंकि जबतक पदार्थोंको नहीं जानोगे तबतक कदापि सुख नहीं पासक्ते.

## पाठ ४१.
## बीमारी.

बहुधा देखा जाताहै कि, कोई २ भोले आदमी रोग साध्य होनेपरभी भाग्यके भरोसे रहकर कुछ उपाय नहीं करके तथा अपनी औरभी कई एक मूर्खताओंसे रोगीको चंगा नहीं कर सक्ते. वे वैद्यादिकोंसे एक तो रोगीकी औषधि नहीं कराते जो कुछ सोंठ हर्र पीपल जानते हैं घरहीमें किया करते हैं और दूसरे रोगीकी इच्छाके अनुसार नानाप्रकारके अपथ्य कर डालते हैं, ऐसा करनेसे जब रोगी मर जाताहै तब कहते हैं कि, भाग्यमें ऐसाही लिखाथा क्या किया जावे ? विचारना चाहिये कि, यदि कोई आदमी नदीके प्रवाहमें वहते हुए निमित्तवशात् कोई सहारा पाजावे और उस समय वह यह सोच करे कि, भाग्यमें लिखा होगा तो बच जाऊगा. सहारेको पकडनेका उद्योग न करे तो वह मरजावेगा कि नहीं ? अवश्य मर जावेगा परन्तु यदि उसे पकड लेगा तो बचही जावेगा, इसी तरह हमें रोगीके बचानेका प्रयत्न करना चाहिये. कोई २

रोग लोभवश हकीम वैद्योंसे दवाई नहीं करात परन्तु वे मूर्ख यह नहीं सोचते कि, वैद्य तो दस पाच रुपयाहीमें मान जावेगा, परन्तु उनकी मृत्यु क्रियामें हालही सौ दोसौ रुपया लगाना पड़ेंगे

रोग होनेही किसी अच्छे जानकार वैद्य व हकीमको बुलाकर परीक्षा कराके शीघ्रही औषधि आरम्भ करादेना चाहिये, क्योंकि, विलम्ब होनेसे रोग जड पकड लेता है, मूर्ख वैद्य व हकीमसे हानि होतीहै, इसलिये जहानक बनें बुद्धिवान व अनुभवीकी खोज करे, और उसे द्रव्यादिमे सतुष्ट रक्खे, जिससे कि वह चिन्तापूर्वक दवाई करे और कोई अपकार न कर सके, बडे रोगोंमें चुटक वैद्योंकी दवाई कदापि न करे

रोगीके चित्तको निरन्तर मनोरंजक बातोंसे तथा आरोग्यताकी आशासे सतोष पहुंचता रहै, उसके निकट शोक प्रगट करना सर्वथा अनुचितहै,

रोगीके स्थानकी व वस्त्रादिकोंकी स्वच्छताकी ओर अधिक ध्यान रहै, क्योंकि, मलीनता आधे रोगतुल्य होती है, रोगीके कमरेमें स्वच्छ हवाका

पढ़ा करता था बनियाँ इस कारण उसकी बहुत हँसी किया करता और कहता कि, "तू किस वाहियात धन्धेमें पडा है जिसमें तेरी उमर मुफ्तमें ही जा रही है, और खानेपीनेसे दुखी हो रहाहै इसे छोडकर मेरा धधा क्यों नही सीखलेता जिससे कि, तेरी यह सब आपत्ति और तकलीफें जाती रहें ?" बालक इन बातोंको सुनकर कुछ उत्तर न देता था और अपने कार्यमें मग्न रहता था

कुछ दिनोंमें वह बालक अपने इस अप्रतिम परिश्रमसे एक धुरन्धर पडित होगया और उसकी विद्याकी चरचा दूर२ तक फैलने लगी जब एक राजाके कानतक उसकी प्रशसा पहुची तब उसने पत्र भेजकर बुलवाया परतु गरीब ब्राह्मणके लड्केने जिसे अब पडितरत्न कहना चाहिये अपने पास वस्त्रालकारादि सामान न होनेसे आनेमें उज्र किया, यह जानके राजाने अच्छी पोशाक हाथी घोड़े खेमे व सरदार लेनेको भेजें और फिर उनके साथ पंडितरत्न सुसज्जित होकर राजाके समीप पहुचे राजाने

उनकी अपूर्व विद्वत्तासे मोहित होकर उन्हें राज गुरु बनाया और अपने राजपुत्रोंके पढ़ानेका काम सौंप दिया.

कुछ दिनोंके पश्चात् जब राजगुरु अपने इस सन्मान और वैभवके साथ अपने ग्रामको आये, तब उसी बनियेकी दूकानके पाससे निकले और उसे बुलाकर पूछा कि, कहो! आज मेरा धंधा अच्छा निकला या आपका? इस प्रश्नसे बनिया बहुत लज्जित हुआ और क्षमा मागनेलगा राजगुरुने उसे अपना पूर्वका हितू जानकर बहुतसा धन देकर और अपनी कृपा रखकर संतुष्ट किया; क्योंकि उन्होंने यह विद्या उसके चिरागके पास बैठकर ही प्राप्त की थी.

---

पाठ ४२.

## नीतिकी कुंडलियाँ.



| | |
|---|---|
| गाहक—लेनेवाले. | सहस हजार. |
| अपावन—मैला | व्यवहार—शिष्टाचार. |
| यार—मित्र | गरज—मतलब. |

| | |
|---|---|
| विरला—कोइ२ | दौलत—धन |
| ठांव—स्थान | निदान—आखिर. |
| विनय—नम्रता | घट—कम |
| पाहुनि—महमान | |

गुणके ग्राहक सहसनर, बिन गुण लहै न कोय ।
जैसे कागा कोकिला, शब्द सुनहिं सब कोय ॥
शब्द सुनहिं सब कोय, कोकिला सबै सुहावन ।
दोऊको इक रंग, काग पै भये अपावन ॥
कह गिरधर कविराय, सुनो हो ठाकुर मनके ।
बिनगुण लहै न कोय, सहस नर ग्राहक गुनके॥१॥
साईं सब संसारमें, मतलबका व्यवहार ।
जबलग पैसा गांठमें तबलग ताके यार ॥
तबलग ताके यार, संगही संगमें डोलें ।
पैसा रहा न पास, यार मुखसे नहिं बोलें ॥
कह गिरधर कविराय, जगत इहि लेखा भाई ।
बिना गरजकी प्रीति, करै कोई विरला साईं ॥ २ ॥
दौलत पाय न कीजिये, सपनेमें अभिमान ।
चंचल यह दिन चारकी, ठांव न रहत निदान ॥
ठांव न रहत निदान, जियत जगमें यश लीजे ।

मीठे वचन सुनाय, विनय सबहीकी कीजे ॥
कह गिरधर कविराय, अरे! यह सब घट तौलत।
पाहुनि यह दिन चार, रहत सबहीके दौलत ॥३॥
विना विचारे जो करै, सो पीछे पछताय।
काम बिगारै आपनो, जगमें होत हँसाय ॥
जगमें होत हँसाय, चित कहुं चैन न पावै।
खान पान सनमान, राग रँग मनहिं न भावै ॥
कह गिरधर कविराय, दु:ख कहु टरत न टारे।
खटकत है दिन रात, कियो जो विना विचारे ॥

## पाठ ४४
## तर्कना शक्ति.

एक वैरागी किसी जंगलमें अकेला जा रहाथा, उसे मार्गमें दो सौदागर मिले उन सौदागरोंको कुछ चिन्तित देखकर वैरागीने पूछा क्या आपका कोई ऊंट खोगया है?

सौदागिर—हा साहिब! हमारा एक ऊंट इसी जगलमें खोगया है.

वैरागी—क्या उस ऊटकी दाहिनी आंख फूटी और बाया पैर लगडा है ?

सौदागिर—हां आप बहुत ठीक कहते हैं, जान पड़ता है कि आपने उसे बडे गौरसे देखा है.

वैरागी—और क्या उसका एक आगेका दांत गिरगया है ?

सौदागिर—हा ! हा ! बेशक वही हमारा ऊट है

वैरागी—और क्या उसकी पीठपर एक तरफ शक्कर और एक तरफ शहद लदी है ?

सौदागिर—हा ! यह सब बातें आपने ठीक बताई, अवश्यही वह हमारा ऊट है, अब इसमें सन्देह नहीं रहा कि, आपने उसे देखा है तो अब कृपाकर हमको दिखाइये कि वह कहा है.

वैरागी—नहीं भाई ! मैं सच कहताहूं मैंने तुम्हारा ऊट कभी नहीं देखा, फिर वह कहा है यह कैसे बतला सक्ता हूं ?

सौदागिर—अरे! तू अभीकाअभी कहकर बदलताहै? इतनी झूठ बोलताहै?तूअवश्यही चोर है यदि

ऊंट नहीं बतलावेगा तो हम तुझे अभी कोतवालके पास ले चलेंगे.

आखिरको वे सौदागिर लड़ते झगड़ते उस वैरागीको कोतवालके पास लेगये. कोतवालने वैरागीसे पूछा कि, जो आपने इनका ऊंट कभी देखाही नहीं था तो इतनी बारीकीसे उसका परिचय कैसे दिया ?

वैरागी—महाशय ! सम्पूर्ण विषय देखनेसे ही जान पड़ते हैं, ऐसाही नहीं हैं, किन्तु अनेक बातें ऐसी भी हैं जो तर्कना शक्तिसे भी यथार्थ जानी जा सक्ती हैं, जब मैंने मार्गमें केवल ऊटके पावोंके चिन्ह देखे, परन्तु उसके साथी मनुष्योंके नहीं, तब यह निश्चय किया कि, वह ऊंट किसीका खोयाहुआ है पश्चात् जब देखा कि, मार्गके दोनों तरफ जो घास खड़ी है, उसमेंसे केवल एकही तरफकी घास खाई गई है दूसरी ओर की रचमात्र भी नहीं, तब अनुमान किया कि, वह एक आखसे जरूर अन्धा होगा, इसके पीछे जमीनपर अन्य पैरोंकी अपेक्षा बायें पैरके चिन्ह बहुत ही कम उछले दीखनेसे मनमें

विचार आया कि, शायद वह बायें पैरसे लंगड़ा होगा. इसके सिवाय बायें तरफकी जो घास खाई हुई थी, उसके बीच२में कुछ घास छूटी देखकर उसका आगेका दांत टूटा होनेकी कल्पना हुई और रास्तेकी एक ओर मक्खियां और दूसरी ओर चींटियां दिखनेसे जाना गया कि, उसके एक तरफ शहद और दूसरी तरफ शक्कर लदी होगी. सारांश मैंने जो कुछ जाना है वह सब तर्कका ही खेल है.

कोतवाल साहिबको उक्त सब बातें भली भांति जॅचगई और उन्होंने वैरागीको निरपराधी जान छोड़ दिया

सुरज श्रवण दृग नासिका, सबहीके इक ठौर।
(पै) कहबो सुनबो देखबो, चतुरनको कछु और॥

---

पाठ ४५.

# विद्यार्थी.

विद्याके अर्थी अर्थात् विद्या पढ़नेवालोंको वि- द्यार्थी कहतेहैं. वे जाति देश और विद्याओंकी

विशेषतासे कई प्रकारके होते हैं, परन्तु सामान्य विद्यार्थियोंके मुख्य तीन भेद होसक्ते हैं

पहिले **उत्तम विद्यार्थी**– उत्तम और उपजाऊ भूमि सरीखे होते हैं उत्तम भूमिमें थोडेसे बीज डालने और उनकी भलीभाति रक्षा न करनेसे भी उससे जिस प्रकार बहुत फलकी प्राप्ति होतीहै, उसी प्रकार उत्तम विद्यार्थी गुरुजीके थोडे पढ़ानेसे भी अपने परिश्रमसे अधिक विद्यावान् होजाते हैं.

दूसरे **मध्यम विद्यार्थी**–तोतेकी तरह होतेहैं. जिस प्रकार तोता जितनेशब्द पढ़ाये जावें उतनेही बोल सक्ताहै उससे अधिक नहीं, उसीप्रकार मध्यम विद्यार्थी गुरु जितना पढ़ाते हैं उतनाही याद कर सक्ता है, परन्तु उस विषयको न्यूनाधिक समझनेकी शक्ति नहीं रखता.

तीसरे **अधम विद्यार्थी** फूटे बर्तनके समान होते हैं. फूटे बर्तनको कुएमें डालकर यदि किसी प्रकार उसमें पानी भर लिया जावे तो वह ऊपर आते २ पानीसे खाली हो जाताहै इसीप्रकार अधम

विद्यार्थीको चाहे जितना पाठ पढ़ाया जावे व याद कराया जावे वह थोडे ही समय पश्चात् सबका सब भूल जाता है

इन तीन भेदोंके सिवाय विद्यार्थियोंका एक भेद और भी है. उस वर्गके विद्यार्थी चालनी सरीखे होते हैं धान्यका कूड़ा कचरा निकालनेके लिये चालनी चलातेही उसमेंसे धान्य तो नीचे गिर पडता है और कूडा कचरा रह जाताहै. इसीप्रकार कोइ २ विद्यार्थी ऐसे होते हैं कि, वे गुरुजीकी शिक्षा तो सब भूल जाते हैं कुछ भी याद नहीं रखते, परन्तु पाठशालाके बुरे लड़कोंके गुण अपने हृदयमें अटका लेते हैं.

प्रत्येक बालकको उत्तम विद्यार्थी बननेका प्रयत्न करना चाहिये

---

पाठ ४६

## मादक पदार्थ.

मादक पदार्थ उन्हें कहते हैं जिनके खाने व पीनेसे शरीरकी चेतनतामें विकार होकर भ्रमबुद्धि

हो जाती हैं और जिसे उत्तम श्रेणीके मनुष्य प्राण जाते भी ग्रहण नहीं करते मदिरा, मदक, चरस, चडू, अफीम, गांजा, पोस्त, तम्बाकू, कोकेन आदिक मादक पदार्थ हैं पहिले भारत वासियोंमें इनका बिलकुल प्रचार नहीं था, परन्तु म्लेच्छादिकोंके संसर्गसे अब इन पदार्थोंकी दिन पर दिन वृद्धि होती जाती है और इसी कारण संसार में असदाचारसे नानाप्रकारके रोग उत्पन्न होने लगे हैं तथा मनुष्य अधिक २ बलहीन ( कमताकत ) होते जाते हैं.

देखो! मदिरा (शराब)कैसी अपवित्र दुर्गन्धमय और घृणित वस्तु है, जिन पदार्थोंसे यह बनती है वे पहिले बडे २ बर्तनोंमें महीनोंसे सडाये जाते हैं इतने समयमें उनमें असंख्यजीव उत्पन्न होजाते हैं, पश्चात् उस सड़े हुए संग्रहको भट्टी पर चढाके यन्त्रके द्वारा उसका तथा उन असंख्य कीड़ोंका अर्क निकाल कर बोतलोंमें भर-देते हैं. वही अर्क अर्थात् शराब फिर बोतलों

महीनोंसे रक्खा रहकर पुन. जीवमय हो जाता है. ऐसी जीवोंकी राशि दुर्गंधमयी मदिराको भी लोग पीना नहीं छोडते और अपने सिरपर महापाप लाद्‌-कर मद्यपी कहलाते हैं, इसके पीनेसे मनुष्य ऐसा बेसुध हो जाता है कि, वह अपनी माता बहिनके साथ स्त्रीतुल्य स्त्रीके साथ माताके तुल्य चेष्टा करने लगता है अपने और परायेका व हिताहितका ज्ञान न होनेसे वह स्वधर्मसे भ्रष्ट होकर हिंसा,चोरी, झूठ कुशीलसेवनादि पापोंमें लग जाता है, मद्य पीने-वाला सारी मानसिक शक्तिया नष्ट हो जानेसे प्रति-दिनके कार्य करनेमें भी असमर्थ हो रोगी हो जाता है जिससे दिनोंदिन उसकी आयु घटती जाती है, संसारसे उसका विश्वास उठ जाता है, वह अपने सब धनको बरबादकर भूखों मरने लगता है और अन्तको बडे कष्टके साथ मरता है

गाजा चरस आदि पदार्थोंके सेवनसे भी मनुष्यों-का यही हाल होता है, फर्क केवल इतना ही है की, इनसे नशा और दुर्दशा कम होती है शराबसे

अधिक, ये पदार्थ ऐसे हैं कि, एकही दिन न मिलें तो मरण हो जाता है लोग इन पदार्थोंको पहिले शौकसे पीते हैं, क्यों कि, इनके सेवनसे शरीरमें गर्म्मी अधिक हो जानेसे खून पतला हो जाता है और इससे उसकी (खूनकी) गति बढ़ जातीहै तथा कुछ कालके लिये इन्द्रियोंकी शिथिलता नष्ट हो जाती है, परन्तु जब अभ्यास पड जाता है तब बडे दुःखी होना पडता है, अनुद्योगी (बेरोजगार) रहनेसे धन नष्ट हो जाता है, कोई पैसेको भी नहीं पूछता और इधर नशेकी खुराक दिनपर दिन बढ़ती जाती है.

नशेबाजोंके शरीर सूखकर लकड़ी हो जाते हैं और उन्हे कई रोग आकर घेर लेतेहैं. ऐसा कोई नहीं नशा नहीं होता जिससे शरीरमें और बुद्धिमें क्षति (हानि) न पहुचे कोई २ लोग गांजा और तमाखू पीनेको अच्छा बतलाते हैं, परन्तु यह उनकी भूल है, ये दोनों पदार्थ भी बहुत हानिकारक हैं. इनमें वीर्यको शोषण करनेका विशेष गुण है.

इनके कारण खासी, दमा, आदि प्राणघातक रोग सैंकडोंको होजाते हैं, इसके शिवाय मुहमें ऐसी दुर्गंध आने लगती है कि जिससे भले आदमियोंके पास बैठनेमें भी लज्जा आती है गाजा तमाखू समय पर न मिलनेसे दुःख होता है और जबतक नहीं मिलते किसी प्रकारका काम नहीं हो सक्ता तथा तमामलोग गंजड तथा नशैल कहकर निन्दा करते हैं, इसके अतिरिक्त नशेबाजोंकी खोटी सङ्गतिमें रहनेसे नाना प्रकारके अवगुणोंकी वृद्धि होती ही जाती है, इस कारण हे बालको ! तुम इनमेंसे किसी भी नशेको न सीखना, बल्कि जो लोग मद्य, गाजा, चरस, चडू, भांग वगैरह पीते हों उनके पासभी नहीं बैठना अगर बैठोगे तो तुम भी सीख जावोगे और फिर छूटना मुश्किल हो जावेगा

गाजा, तमाखू, चरस आदिका अभ्यास करना लुच्चे लफंगोंका काम है और विद्याका अभ्यास करना भले आदमियोंका काम है

---

पाठ ४७

## स्वच्छहवा.

प्राणियोंके जीवनके लिये तीन चीजोंकी आव-श्यकता है. १ अन्न, २ पानी और ३ हवा जिनमें सबसे मुख्य हवा है, क्योंकि, अन्न और पानीके विना प्राणी थोडे समयतक जी भी सकता है परन्तु हवाके विना तो क्षणभर भी जीना कठिन है हवा एक ऐसा पदार्थ है कि, वह किसीकी भी दृष्टिमें नहीं आता, परन्तु ससारमें कोई भी स्थान ऐसा नहीं है जहा हवा न हो मनुष्यसे लेकर चिउँटी तक सब प्राणियोंको हवाकी जरूरत रहती है किसी वर्तनमें एक जीवधारी रखकर जब हम उसकी हवा **वायुनिष्कासन** यन्त्रके द्वारा निकाल डालते हैं. तब वह जीवधारी उसी समय तडफडाकर मर जाता है. इससे सिद्ध होता है कि, हवा प्राणियोंको जीवनमूल है.

हवा कईप्रकारकी होती है, परन्तु आरोग्यताके सम्बन्धमें उसके मुख्य दो प्रकार ( भेद ) अधिक

उपयोगी हैं, एक **आक्सिजन** अर्थात् प्राणप्रद वायु और दूसरी **कार्बोनिक एसिडग्यास** अर्थात् हिंसकवायु. जीवधारियोंकी स्वासके साथ जो वायु निकलती है वह हिंसक वायु है और वृक्षोंके लिये अधिक उपयोगी है तथा जो वायु वृक्ष छोड़ते हैं और जिसे प्राणी स्वासके द्वारा लेते हैं वह प्राणप्रद वायु है यह प्राणप्रदवायु शरीरमें जाकर खूनको साफ करती है और शरीरके मैले पदार्थोंसे संयोजित होनेसे मैली होकर हिंसक वायु हो जाती है. यह वायु पुनः स्वासके द्वारा लेनेसे नुकसान करती है इसलिये इससे सदा बचे रहकर प्राणप्रद अर्थात् स्वच्छ हवाके मिलनेका प्रयत्न करना चाहिये.

१ जीवधारियोंकी सघनतामें स्वासोंके अधिक निकसनेसे, २ पदार्थोंकी सड़ावटसे, ३ मैलेपनसे और ४ पदार्थोंके जलनेसे, हिंसक वायुका अधिक सञ्चार होता है इसलिये हवा बिगडनेके इन द्वारोंको प्रथमसे ही बन्द कर देना चाहिये जिससे हिंसक वायुका प्रादुर्भाव न होकर हमेशा प्राणप्रद वायु

मिलती रहै, स्वच्छ हवाकी प्राप्तिके लिये निम्न-लिखित बातों पर ध्यान देना चाहिये.

१ एक साधे कमरेमें एक या दोसे अधिक मनुष्य न सोवें, क्योंकि मनुष्योंकी स्वाससे हिंसक वायुका संचय बहुत हो जाता है.

२ सबेरे चार बजे कमरेकी सब खिडकिया खोल दी जावें, क्योंकि, प्रातः शुद्ध वायुका सम्मिलन अधिक होता है और वह वायु स्वास्थ्यके लिये अधिक लाभकारी होती है.

३ मकान समय २ पर गोबर और चुनेसे लीपा पोता जावे, क्योंकि, इन दोनों पदार्थोंमें हवाके विषहरे कीड़ोंके नष्ट करनेकी शक्ति है.

४ मकानके आसपास, नीम, तुलसी, निम्बू आदिके वृक्ष तथा गुलाबादिक फूलोंके पौधे जहातक हों रखना चाहिये, क्योंकि, इनसे हिंसक वायु बहुत शुद्ध होती है

५ मकानके आसपास किसीप्रकारका कूडाक-चरा जमा न होनी पावे.

उपयोगी हैं, एक आक्सिजन अर्थात् प्राणप्रद वायु और दूसरी कार्बोनिक एसिडग्यास अर्थात् हिंसकवायु. जीवधारियोंकी स्वासके साथ जो वायु निकलती है वह हिंसक वायु है और वृक्षोंके लिये अधिक उपयोगी है तथा जो वायु वृक्ष छोडते हैं और जिसे प्राणी स्वासके द्वारा लेते हैं वह प्राणप्रद वायु है यह प्राणप्रदवायु शरीरमें जाकर खूनको साफ करती है और शरीरके मैले पदार्थोंसे संयोजित होनेसे मैली होकर हिंसक वायु हो जाती है. यह वायु पुनः स्वासके द्वारा लेनेमें नुकसान करती है इसलिये इससे सदा बचे रहकर प्राणप्रद अर्थात् स्वच्छ हवाके मिलनेका प्रयत्न करना चाहिये

१ जीवधारियोंकी सघनतामें स्वासोंके अधिक निकसनेमें, २ पदार्थोंकी सडाहटमें, ३ मैलेपनसे और ४ पदार्थोंके जलनेसे, हिंसक वायुका अधिक सञ्चार होता है इसलिये हवा बिगडनेके इन द्वारों को प्रथममें ही बन्द कर देना चाहिये जिससे हिंसक वायुका प्रादुर्भाव न होकर हमेशा प्राणप्रद वायु

मिलती रहे, स्वच्छ हवाकी प्राप्तिके लिये निम्न-लिखित बातों पर ध्यान देना चाहिये

१ एक साथे कमरेमें एक या दोसे अधिक मनुष्य न सोवें, क्योंकि मनुष्योंकी स्वाससे हिंसक वायुका सचय बहुत हो जाता है.

२ सबेरे चार बजे कमरेकी सब खिड़कियां खोल दी जावें, क्योंकि, प्रात. शुद्ध वायुका सम्मिलन अधिक होता है और वह वायु स्वास्थ्यके लिये अधिक लाभकारी होती है

३ मकान समय २ पर गोबर और चुनेसे लीपा पोता जावे, क्योंकि, इन दोनों पदार्थोंमें हवाके विपहरे कीडोंके नष्ट करनेकी शक्ति है

४ मकानके आसपास, नीम, तुलसी, निम्बू आदिके वृक्ष तथा गुलाबादिक फूलोंके पौधे जहांतक हो रखना चाहिये, क्योंकि, इनसे हिंसक वायु बहुत शुद्ध होती है.

५ मकानके आसपास किसीप्रकारका कूड़ाक-चरा जमा न होनी पावे.

६ सबेरे और शामको नियमसे शहरके बाहिर खेतों और मैदानोंमें घूमनेके लिये जाना चाहिये क्योंकि, जैसी स्वच्छहवा बाहिर मिलती है वैसी शहरमें मिलना दुर्लभ है

आजकलके वैज्ञानिक लोग हवाको पृथिवीसे४५ मील ऊपर तक बतलाते हैं हम पृथ्वीसे ज्यों ज्यों ऊपर जाते हैं हवा पतली और विरल मिलती जाती है किन्तु नीचे अधिक सघन है.

पाठ ४८.

## शिक्षाजनक प्रश्नोत्तर.

प्रश्न—सुबुद्धि काहेसे होती है ?

उत्तर—गुरुजनोंकी सेवा करनेसे

प्रश्न—वे कौनसे दो पदार्थ हैं जो अल्प देनेसे अधिक मिलते हैं ?

उत्तर—उपजाऊ भूमिमें दियाहुआ अनाज और सत्पात्रको दिया हुआ दान

प्रश्न—सबसे उत्तम फल कौन ?

उत्तर—सुपुत्र.

प्रश्न—जीते हुए भी मृतकके समान कौन ?

उत्तर—मूर्ख और जिसका शरीर परोपकारमें नहीं लगा

प्रश्न—पृथ्वीसे भी बडी कौन ?

उत्तर—माता.

प्रश्न—आकाशसे भी ऊंचा कौन ?

उत्तर—पिता.

प्रश्न—कुटुम्बकी रक्षा करनेवाला मित्र कौन ?

उत्तर—धन.

प्रश्न—सबसे उत्तम धन कौन ?

उत्तर—विद्या

प्रश्न—रोगीका मित्र कौन ?

उत्तर—औषधि.

प्रश्न—मरनेपर मित्र कौन ?

उत्तर—एक धर्म.

प्रश्न—सुखका मुख्यस्थान और उत्तम सुखकौन?

उत्तर—सदाचरण और संतोष.

प्रश्न—साधु पुरुष कौन ?

उत्तर—प्राणीमात्रका हित करनेवाला.

प्रश्न—उत्तम मार्ग कौन?

उत्तर—हमारे पूज्य विद्वान पुरुष जिस मार्गसे चले हैं

प्रश्न—पांच पाप कौन २ से है ?

उत्तर—१ जीवहिंसा, २ चोरी, ३ झूठ बोलना, ४ कुशील सेवन, ५ क्रोध मान मायादि तथा धन धान्यादि परिग्रहोंका धारण.

प्रश्न—इस दुःखमय संसारमें जीवोंके शरण्य कौन हैं ?

उत्तर—सच्चे देव, सच्चे गुरु, और सच्चे शास्त्र.

प्रश्न—जीवोंके शत्रु कौन हैं ?

उत्तर—क्रोध, मान, माया, लोभ

प्रश्न—मलीन कौन है ?

उत्तर—पापी

प्रश्न-सदा पवित्र कौन है ?

उत्तर—ब्रह्मचारी.

प्रश्न–कायर कौन है?

उत्तर–जो इन्द्रियोंको वश नहीं कर सक्ता

प्रश्न–शूरवीर कौन है?

उत्तर–जिसने विषयकषाय जीत लिये हैं

प्रश्न–पंडित कौन है?

उत्तर–जो आप सुमार्गपर चलै और दूसरोंको चलावै तथा कुमार्गका नाश करै.

प्रश्न–किस मनुष्यका जन्म सफल है?

उत्तर–जिसने धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चारों पुरुषार्थोंका साधन किया

पाठ ४०.

## दृष्टान्तके दोहे.

जियहिंसा–जीवहिंसा अर्थात् जीवोंका घात

| | |
|---|---|
| भखत है–खाती है | चिरी–चिड़िया. |
| मुनिराज–साधु, सन्त. | सुर–देव |
| नर–मनुष्य | दृग–आँखें. |
| द्विग–नरजीव, श्वास | सुआ–तोता. |
| संताप–दुःख | भालै–देखे |
| नृप–सुआ. | संग्रह–इकट्ठा करना. |

परिग्रह–हाथी, घोडे, जमीन, धन धान्यादि पदार्थ

| | |
|---|---|
| मधु–शहद. | पेखहु–देखो |
| राग–गायन | राग–प्रेम |
| मसक–चमडेकी धौंकनी. | रोष–क्रोध |
| नेह–स्नेह | पवनहिं–हवाको |
| जन्त्र–कोल्हू. | नेह–चिकनई |

जियहिंसा जगमें बुरी, हिंसाफल दुख देत।
मकरी माखी भखतहै, ताहि चिरी भख लेत ॥ १ ॥
जियहिंसा करते नहीं, धरते शुद्धस्वभाव।
देखहु! तिन मुनिराजके, सेवत सुर नर पॉव ॥२॥
झूठ भलो नहिं जगतमें देखहु किन ? दृग जोय।
झूठी तोती बोलती, ता ढिग रहै न कोय ॥ ३ ॥
सॉच बडो संसारमें, मानत सब परमान।
सॉच सुआ कहै रामको, सुनत सब हि धर कान॥४॥
बिन दीनों जे लेत हैं, तिनहिं लगै बहु पाप।
चोरहिं सूरी दीजिये, देखहु! जग संताप ॥ ५ ॥
शीलव्रत पालै नहीं, भालै परतिय रूप।
पेखहु! रावण आदि बहु, परे नर्कके कूप ॥ ६ ॥
परिग्रह संग्रहना भलो, परिग्रह दुखको मूल।

माखी मधुको जोरती, देखहु! दुखको शूल ॥ ७ ॥
राग न कीजे जगतमें, राग किये दुख होय ।
देखहु! कोकिल पीजरें, गहि डारत हैं लोय ॥ ८ ॥
पवन जु पोषै मसकको, मसक थूल है जाय ।
देखहु! संगति दुष्टकी, पवनहिं देत जराय ॥ ९ ॥
नेह न कीजे आनसों, नेह किये दुख होय ।
नेह सहित तिल पेलिये, डार जंत्रमें जोय ॥ १० ॥
भगवतीदास

---

पाठ ५०

## समय.

समयकी ऐसी विचित्र गति है कि,वह विना पक्षों-के (पखोंके) पक्षियोंसे भी अधिक उड़ताहै रेल गाड़ी तार आदि शीघ्रगामी (जल्दी चलनेवाले) यन्त्रोंकी गतिको तो हम रोक सक्ते हैं, परन्तु इसकी अविरल गतिको रोकना शक्तिसे (ताकतसे) बाहिर है. इसकी शीघ्रगतिको यदि मनकी उपमा दी जावे तो कदाचित् (शायद) ठीक हो सक्ती है; नहीं तो अन्यपदार्थ इसकी तुलना योग्य नहीं दीखते,

समय यह एक ऐसा पदार्थ है कि, गया हुआ फिर वापिस नहीं आता, दुनियाकी खोई हुई सब चीजें किसी न किसी प्रकार धनादि खर्च करनेसे मिल सक्ती है, परन्तु रुक्षावधि (लाखों) रुपया खर्च करनेसे भी हमारी जिनगीका (उमरका) गया हुआ एक मिनिट फिर नहीं बदलता, जैसे हमारी उमर १०० वर्षकी है उसमेंसे जो २० वर्ष व्यतीत हो चुके हैं, वे हम अपना सर्वस्व खोदेनेपर भी नहीं पा सक्ते इसीसे कहते हैं कि, समय बहुमूल्य है

जब समय ऐसी अनमोल वस्तु हो तो हमें चाहिये कि उसे बहुमूल्य कामोंमें ही बडे विचारके साथ वितावें उसका अपव्यय करना मृत्यु (मौत) रूपी दरिद्रताका आना ही है; इसलिये यदि दरिद्र नहीं बनकर सुखी रहना चाहते हो तो समयको उत्तम २ तदवीरोंसे बचानेमें तत्पर रहो, सूम पुरुष धनवान हो जाते हैं इसका कारण यह नहीं है कि उनकी आमदनी अधिक है, परन्तु वह एक २ कौडी जमा करते हैं इससे कुछ समयमें धनिक

हो जाते हैं सब मनुष्योंको चाहिये कि समय बचानेके लिये सूमलोगोंकी आदतें सीखें.

खेद और आश्चर्यका विषय है कि, समय जगतके सब पदार्थोंसे बहुमूल्य होनेपर भी इतनी मूर्खता और लापरवाहीसे खर्च किया जाता है कि, जितना अन्य कोई थोडी कीमतवाला पदार्थ भी नहीं किया जाता, और सो भी ऐसे आदमियोंके द्वारा दोनों होथोंसे लुटाया जाता है जो हरएक बातमें किफायत करते हैं. यह सब कहते हैं कि, समय थोड़ा है और जिन्दगी कम है, परन्तु उनकी निस्पृहता ( लापरवाही )देखोगे तो यह कहना सर्वथा बनावटी जान पडेगा, असलमें वे अपने समयको इतना बहुत और मरनको इतना दूर मानते हैं कि, उसे याद भी नहीं करते. क्योंकि, यदि वे अपनी मौत नजदीक जानते तो इस तरह समय नष्ट न करते,

समय नष्ट होनेके नीचे लिखे मुख्य ९ कारण हैं इनका परिहार करके जो सदा चलेगा उसका समय बहुत बच सकेगा, १ निद्रा—इसे मामूली ६-७

घंटेसे अधिक लेनेसे समयकी हानिके सिवाय आरोग्यताभी बिगडती है, २ आरामतलबी—इससे आजके काम तो कलपर और कलके परसोंपर टाल दिये जाते हैं, परन्तु होता कुछ भी नहीं, ३ आलस्य, ४ भेंट (मुलाकात)—इसमें घडी दो घडी व्यय करनेसे यद्यपि थकावट व परिश्रमका उतार हो जाताहै, परन्तु इसीमें सारा समय बिता देना मूर्खता है. ५ अश्लील और घृणितपुस्तकोंका पढ़ना—इसके बदले नीति और सदाचार सिखलानेवाली मनोरंजक पुस्तकें पढ़ना मस्तिष्क (मगज) को सुखकारी होती है ६ अनियमबद्ध काम करना—इस आदतसे कोईभी कार्य पूर्ण नहीं होता, क्योंकि एकके पूर्ण हुए बिना दूसरा कार्य प्रारंभ कर दिया जाता है. ७ जिस काममें जी न लगे उसे करना—८ टालाटालीकी आदत और ९ सोचना बहुत, करना कुछ भी नहीं

अब यहांपर यह दिखलाना बहुत लाभकारी होगा कि, समय किस क्रमसे बिताना चाहिये"प्रात॰

पाच वजे उठकर भगवानका स्मरण करै, पश्चात् शौचादिक करके शरीर बलिष्ठ और आरोग्य रखनेके लिये कसरत करै, पश्चात् दिनभरमें जो कार्य करना हो उन्हें डायरीमें लिख लेवे, फिर स्नान पूजन भोजनादि आवश्यक कर्म करके सांसारिक कार्योंमें जिनसे शरीर, कुल, मान और धनकी यथायोग्य वृद्धि हो सकै प्रवृत्त होवे और डायरीमें लिखे हुए कामोंको क्रमसे पूरा करै जो आज नहीं हो सकै वह कल करै रात्रिको सर्व कार्योंकी आलोचना करै और जिन्हें अयोग्य समझै उन्हें आगेसे न करनेकी प्रतिज्ञा करै " जो पुरुष इस नियमसे चलेगा उसे समय न मिलनेकी शिकायत कभी न करनी पड़ैगी और वह सदा अपना काम धीरज तथा सुचिंताईसे करता हुआ सुखसे जगतमें निर्वाह कर सकेगा.

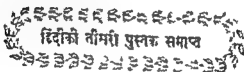


## ॥ दोहा ॥

नभ रस गो शशिअनि सुभग, सम्वत विक्रमभूप ।
मँगसिर श्वेत दिनेश तिथि, मङ्गलवार अनूप ॥१॥

मोहमयी वर नगरि बस, प्रेमी नाथूराम ।
नीति चरण पूरण रची, पुस्तक तृतिय ललाम ॥२॥

जो बालक इहिको पढ़ैं, चितमें धर उतसाह ।
सो जगमें सुयशा करहिं, निजजीवन निर्वाह ॥३॥



## ॥ दोहा ॥

नँभ रँस गो शँशिअति सुभग, सम्वत् विक्रमभूप ।
मँगशिर श्वेत दिनेश तिथि, मंगलवार अनूप ॥१॥

मोहमयी वर नगरि वस, प्रेमी नाथूराम ।
नीति चरण पूरण रची, पुस्तक तृतिय ललाम ॥२॥

जो बालक इहिको पढ़ै, चितसों धर उतसाह ।
सो जगमें सुखसों करहिं, निजजीवन निर्वाह ॥३॥

